आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' दिसम्बर 2023

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 36
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

। वर्ष –24 । अंक–12 । मार्गशीर्ष /पौष मास । दिसम्बर 2023

मातृका

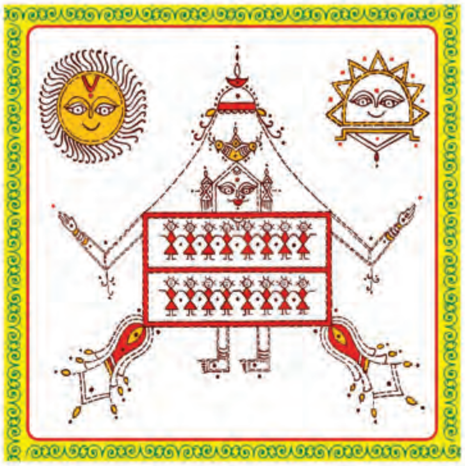

अमला

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

व्यापारिक पूछताछ के लिए संपर्क करें:
कॉल: 705-562-1720
1800-270-4485

Chaubejee & Sons

Unit I : Plot No. B-2 Site - B. U.P.S.I.D.C, Industrial Area Sikandra, Agra- 282007 (U.P.) fssai Lic. No. 10018051002665

Unit II: Plot No. D-7 Site - B U.P.S.I.D.C, Industrial Area Sikandra, Agra- 282007 (U.P.) fssai Lic. No. 10019051003095

(र.क्र. 2023/2071)

श्रद्धेय श्री राजेंद्र नाथ चतुर्वेदी (रज्जन)

07 जुलाई 1933 – 30 दिसंबर 2022

(पूर्व सभापति श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा)

(पूर्व सभापति श्री माथुर चतुर्वेदी सभा,कोलकाता)

(पुत्र स्व. श्री घनश्याम दास चतुर्वेदी एवं स्व. श्रीमती इन्दिरा देवी चतुर्वेदी)

की प्रथम पुण्य तिथि के अवसर पर
सादर पुण्य स्मरण एवं विनम्र श्रदांजलि

–: श्रद्धावनत् :–

श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी
(धर्मपत्नी)

पुत्र–पुत्रवधु :
आलोक–प्रीती चतुर्वेदी
पीयूष–रश्मि चतुर्वेदी
गंगेश–बिन्दु चतुर्वेदी

पुत्री-दामाद :
सुनीता–कृष्णकांत जी
प्रीती–अंशुमान जी

पौत्री-दामाद :
अनुप्रिया–रतन जी
रितान्या

पौत्र-पौत्री :
अभिषेक, कोमल
विनायक, सौम्या
गौरांग

दौहित्र-दौहित्री:
नम्रता, अपूर्वा
अश्विनी

एवं समस्त धौम्य गौत्रीय श्री गोपाल परिवार
होलीपुरा–कोलकाता

दौहित्र-दौहित्रवधु:
मोहित–हेमलता
आरव

(र.क्र. 2023/2062)

चतुर्वेदी समुदाय, मुम्बई का दीपावली मिलन समारोह

(र.क्र. 2023/2065)

चतुर्वेदी समुदाय, मुम्बई का दीपावली मिलन समारोह

(र.क्र. 2023/2065)

दीपावली मिलन समारोह

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
विविध रंग से परिपूर्ण रहा बीता साल 2023	11
गुरुदेव बाबा नीम करोली महाराज	12
मेरे धर्म की गरीबी	14
अयोध्या दीपोत्सव	15
मसाल दान में छिपे सेहत के राज	16
थाली में हो पोषक आहार	17
समीक्षाः ब्रज की रसोई	19
सभी संजोलो थाती अपनी	21
होलीपुरा	22
फूल (अस्थियों) का गंगा आदि पवित्र नदियों में विसर्जन क्यो?	23
श्री कमलेश चन्द्र पाण्डेय - पूर्व सभापति व संरक्षक	24
शाखा समाचार	27
समाज समाचार	29
बिछड़े स्वजन	30

अंक 12
दिसंबर 2023, वर्ष - 24

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक
श्री दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
श्रीमती चित्रा दिलीप चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com
वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

मौसम में ठंडक ने अपनी दस्तक दे दी है। उत्तर भारत में ठंड का असर देखने प्रारंभ हो गया है। धीरे-धीरे यह अपनी रफ्तार पकड़ रही है। शीघ्र ही हमें ठंड का संपूर्ण असर मौसम में देखने को मिलेगा हम सभी इसकी तैयारी कर ले वह इस मौसम परिवर्तन पर अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें।

पांच दिवसीय दीपोत्सव (धनतेरस, रूपचतुर्दशी, दीपावली, अन्नकूट, यम द्वितीया) की सानंद समाप्ति के उपरांत देवोत्थान एकादशी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। देवउठनी एकादशी, गुरुवार 23 नवंबर 2023 को भगवान विष्णु योग निद्रा से जागें। इसके बाद देवउठनी एकादशी मनाई गई। इस दिन भगवान विष्णु 5 माह की निद्रा के बाद जागे। इसके बाद से विवाह आदि सभी मांगलिक कार्य शुरू हो हुए। इस दिन लोग घरों में भगवान सत्यनारायण की कथा और तुलसी - शालिग्राम के विवाह का आयोजन करते हैं। भगवान के सोकर उठने (योगनिद्रा) की खुशी में देवोत्थान एकादशी मनाया जाता है। इसी दिन से सृष्टि को भगवान विष्णु संभालते हैं। इसी दिन तुलसी से उनका विवाह हुआ था। इस दिन महिलाएं व्रत रखती हैं। परम्परानुसार देवउठनी एकादशी में तुलसी जी विवाह किया जाता है। इस दिन उनका श्रृंगार कर उन्हें चुनरी ओढ़ाई जाती है और परिक्रमा की जाती है। शाम के समय रौली से आंगन में चौक पूर कर भगवान विष्णु के चरणों को कलात्मक रूप से अंकित करते हैं। तत्पश्चात विधिवत पूजन के बाद भगवान को शंख, घंटा आदि बजाकर जगाया जाता है और पूजा करके कथा सुनी जाती है।

विभिन्न अवसरों पर समय-समय पर अन्नपूर्णा सहयोग करने वाले सभी बांधवों का बहुत-बहुत आभार इसमें भाई विवेक जी मुंबई का बहुत-बहुत आभार। जिन्होंने अपनी पुत्री डॉ. श्रुति की उपलब्धि पर 42000/- अन्नपूर्णा योजना सहायतार्थ तथा दो पेज (रंगीन विज्ञापन सभा के दीपावली मिलन की झलकियों) के लिए प्रदान किये।

हमारे मथुरा में कंस का मेला आयोजित किया गया। इसमें चतुर्वेदी समुदाय के लोग कंस के पुतले को लाठियों से पीटते हैं। कहा जाता है कि द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने कंस का संहार किया था। कलयुग में यह परंपरा चतुर्वेदी समाज के लोग निभाते हैं। कार्तिक शुक्ल पक्ष की दशमी पर कंस वध मेला सदियों से लगता आ रहा है।

अनेक शहरों में समाज की दीपावली मिलन कार्यक्रम आयोजित किए गए। इसमें गुरुग्राम, आगरा, कोटा, मुंबई आदि अनेक शहरों में यह कार्यक्रम धूमधाम से आयोजित किए गए।

कानपुर बैठक में नए सभापति के चयन हेतु चुनाव समिति का गठन कर दिया गया था। जिसकी घोषणा विगत अंक में की जा चुकी है। श्री गोपाल कृष्ण जी (नोएडा) के संयोजन में चुनाव समिति ने चुनावी कार्यक्रम की घोषणा कर दी है। जिसके तहत चुनावी प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। आप सभी के सहयोग,सहमति व इच्छा अनुसार नए सभापति का चुनाव शीघ्र ही संपन्न हो जाएगा व हमारे समाज को एक नया सभापति नए वर्ष में प्राप्त होगा। विगत कई वर्षों से हमारे समाज में चयन की स्वस्थ परंपरा निभाई जा रही है।

संपादकीय

चतुर्वेदी समाज के आधार स्तंभ कानपुर के श्री विकास चतुर्वेदी चुन्ना भैया के भागीरथी प्रयासों से इतने कम समय में एक भव्य बैठक का आयोजन सराहनीय है। इसी के साथ उनके सहयोगियों सर्वश्री अविनाश जी, स्वतंत्र प्रकाश जी, आशुतोष जी, प्रवेश जी, संजय मिश्रा जी अनूप जी, अनुराग जी, धर्मेंद्र जी, आकर्ष जी का सहयोग भी उल्लेखनीय है।

कानपुर बैठक में कानपुर समाज के वरिष्ठ समाजसेवियों व प्रतिभावान बांधवों को महासभा द्वारा सम्मानित किया गया। यह एक अनुकरणीय पहल है। इसी कार्यक्रम में विकास चतुर्वेदी जी को सम्मानित करते हुए महासभा ने संरक्षक के रूप में मनोनीत किया गया। विकास जी, चुन्ना भैया को यह उनकी समाज सेवाओं के स्वरूप मनोनीत करके महासभा गौरवान्वित है। कानपुर की बैठक को लेकर कानपुर से अनेक बांधवों के पत्र प्राप्त हुए। जो कार्यक्रम की भव्यता व रोचकता को उजागर कर रहे थे। बैठक में महासभा के सभापति के साथ सभी संरक्षकों को साफा पहनकर सम्मानित किया गया। कानपुर बैठक में सभापति के आगामी चुनाव हेतु चुनाव समिति के गठन की घोषणा की जिसने अपनी बैठक कर आगामी सभापति चुनाव हेतु चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की जिसका प्रकाशन विगत अंक में किया जा चुका है। समाज में चुनावी सरगर्मियां आरंभ हो चुकी हैं। इस बैठक में महासभा की उपसभापति श्रीमती उषा चतुर्वेदी ने अपनी सभापति बनने की दावेदारी के मद्देनजर नैतिकता के नाते उपसभापति पद से त्यागपत्र दे दिया। महासभा के 100 वर्ष के इतिहास में प्रथम बार कोई महिला प्रत्याशी का नाम आ रहा। यह समाज की उन्नति का द्योतक है। हमें इस कदम को गर्व से स्वीकार करना चाहिए।

भाई राहुल चतुर्वेदी जी को मैनपुरी शहर के भाजपा जिला अध्यक्ष मनोनीत होने पर हार्दिक बधाई। इसी के साथ श्री शलभ जी, सुश्री तूलिका जी, चि. धवल, कु. जाह्नवी, चि. वेंकटेश को भी उनकी उपलब्धियों पर हार्दिक बधाई। लखनऊ मंडल के पेपर चतुर्वेदी संदेश के पुनः प्रकाशन पर मंडल के अध्यक्ष अजय जी, मंत्री नमन जी व संपादक दिलीप जी को हार्दिक बधाई।

इस अंक में हम भाई दिलीप जी (लखनऊ) के सहयोग से बाबा नीम करौरी पर जानकारी पूर्ण लेख प्रस्तुत कर रहा है। आ0 कुश जी ने संपूर्ण 2023 वर्ष की संक्षिप्त समीक्षा अपने अनोखे अंदाज में ही प्रस्तुत की है। इसी के साथ ब्रज की रसोई पुस्तक की कुछ अंश भी प्रस्तुत है। साथ ही इस पुस्तक की समीक्षा भी इसी अंक में प्रकाशित की जा रही है। वर्तमान वर्ष मिलेट वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसी के अंतर्गत मिलेट अन्न के बारे में सब विस्तार जानकारी आदरणीय उषा जी द्वारा साझा की गई है। मिलेट अन्न को हम लोग मोटे अनाज के रूप में जानते हैं व इसका सेवन भी हम लोगों के परिवारों में ठंड के दिनों में किया जाता है, क्योंकि इनकी तासीर गर्म होती है।

इस अंक में भाई भरत जी के सहयोग से हमारी महासभा के पूर्व सभापति वह वर्तमान संरक्षक श्री कमलेश चंद पांडे जी के बारे में एक आलेख भी प्रस्तुत कर रहे हैं। विभिन्न शहरों में चतुर्वेदी समाज में दीपावली मिलन की आयोजन किये जा रहे हैं। जिसमें मुंबई, कोटा, आगरा व गुरुग्राम आदि शहरों की उपलब्ध जानकारियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं। मुंबई सभा के अध्यक्ष श्री विवेक जी के सहयोग से पत्रिका में दो कलर पेजों में दीपावली मिलन कार्यक्रम की रंगीन झलकियां प्रस्तुत की जा रही है। इसी के साथ विवेक जी ने अपनी पुत्री के एम. एस. प्लास्टिक सर्जरी के एग्जाम में सफलता प्राप्त करने पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 42000/- भी प्रदान किये। मातृका पूजन व अमला के चित्र हेतु डॉ- विनीता चौबे का आभार।

विगत एक वर्ष पूर्व मेरे पिता स्व. जगदीश प्रसाद जी (कछपुरा/भोपाल) के साथ भाई राहुल जी (मैनपुरी) के पिता जी व भाई यदुवेश जी (तालगांव/लखनऊ) के पिता जी, विनय जी (अध्यक्ष,कोटा) के पिता जी के साथ महासभा के पूर्व सभापति आ0 राजेन्द्र नाथ जी,रज्जन (कोलकाता) एवम आ0 आलोक जी (नोयडा) का भी गोलोक गमन हुआ व विवेक जी (अध्यक्ष,मुंबई) की माता जी का भी स्वर्गवास हुआ। यह दुख हम सबने एक ही समय में सहन किया था। सभी दिवंगत स्वजनों को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

- शशांक चतुर्वेदी

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा), श्री विकास चतुर्वेदी (कानपुर)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका - श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर - शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "संजू"(ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद), डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री अशोक चतुर्वेदी (फरीदाबाद), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), श्री मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मनोज मिश्रा (मैनपुरी), श्री संजय चतुर्वेदी (फरीदाबाद), श्री आशीष चतुर्वेदी, रानू (आगरा), श्री दीपक चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष सुभाष चतुर्वेदी (आगरा)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा), श्रीमती अरूणा चतुर्वेदी (कोटा), श्रीमती कीर्ति मिश्रा (हैदराबाद), श्रीमती निधि चतुर्वेदी (आगरा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुनील चतुर्वेदी (जयपुर), श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110019

विविध रंग से परिपूर्ण रहा बीता साल 2023

- डा० कुश चतुर्वेदी, इटावा

हर साल कुछ खट्टी मीठी चरपरी स्मृतियां छोड़ कर जाता है। वर्ष 2023 भी हम सबके जीवन में कुछ अविस्मरणीय छोड़ कर जा रहा है। वर्ष नया आता है और हम और पुराने हो जाते हैं। अपने पुराने होने का जश्न हम नवागत के स्वागत के रूप में मनाते हैं। यही हमारी परंपरा है, जिसमें आनन्द के पल खोज कर लाए जाते हैं।

बीते साल में जहां हमें चंद्रयान 3 को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर अपने ध्वज को फहराने का सुख मिला वहीं देश के पूर्वोत्तर मणिपुर में मातृ शक्ति के साथ हुई बर्बरता का दाहक दंश भी झेलना पड़ा।हमारे देश को जी 20 की सदारत और मेजबानी का गौरव मिला वहीं आजाद भारत में सबसे लम्बी पदयात्रा का श्रेय कांग्रेस नेता श्री राहुल गांधी को भारत जोड़ो यात्रा के माध्यम से मिला।भारत ने आजादी की पचहत्तर वीं वर्षगांठ के वर्ष भर चले कार्यक्रमों का समापन देश भर से शहीदों के गांव की मिट्टी को स्मारक रूप में दिया।देश की संसद को नया भवन मिला तो राज्य विधान सभा चुनावों में भारी उलट फेर दिखाई दिया।देश ने ओलंपियन महिला खिलाडियों को धरना प्रदर्शन करते ही नहीं गोल्ड मेडलिस्ट खिलाड़ियों को सड़कों पर घसीटते हुए भी देखा।हमने ओलंपिक खेलों में आशातीत सफलता पाई,अनेक मेडल हमे मिले।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इजराइल पर हमास का हमला फिर इजराइल की जबावी कार्यवाही ने दुनियां में हलचल पैदा कर दी।कनाडा के प्रधानमंत्री के एक बयान पर भारत सरकार के प्रति उत्तर ने विश्व में भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति को और मजबूत किया।तुर्की में आई प्राकृतिक आपदा पर भारत की मानवीय मदद भी चर्चा में रही। बेरोजगारी,महंगाई,भ्रष्टाचार,जातीय..सांप्रदायिक उन्माद,राजनेताओं के हल्के बयान जैसे यक्ष प्रश्न न कम हुए न कमजोर।पूरे साल संवैधानिक संस्थानों की विश्वसनीयता को लेकर प्रतिपक्ष द्वारा सवाल उठाए जाते रहे।सत्ता पक्ष विश्वनाथ मंदिर कारिडोर,वंदे भारत एक्सप्रेस,निशुल्क खाद्यान्न वितरण जैसी योजनाओं। का प्रचार जोर शोर से किया जाता रहा।छोटे बड़े सभी चुनावों में नेताओं के हल्के बयान देश के सामान्य जन को मानसिक पीड़ा हो देते रहे।क्रिकेट में विश्वकप प्रतिस्पर्धा में भारत ने दस मैच लगातार जीते और फाइनल मैच को छोड़ कर भारत कोई मैच नहीं हारा।यह अपने में बड़ी उपलब्धि रही।फाइनल में आस्ट्रेलिया विनर और भारत रनर रहा।

हमारी महासभा के सभापति आदरणीय डा० प्रदीप चतुर्वेदी जहां इसी वर्ष सेवानिवृत्त हुए वहीं उन्होंने अपना सुखद सभापतित्व काल भी पूर्ण किया और नए वर्ष में शायद नए सभापति के रूप में महासभा को कोई नई विभूति मिले।बीते साल में महासभा की कार्यकारिणी की फरौली,आगरा तथा कानपुर की सफल बैठक रहीं।इस दौरान इन स्थानों पर बुजुर्गों का सम्मान जैसे प्रेरक कार्यक्रम भी हुए।मुझे सचमुच बड़ी खुशी हुई जब इंग्लैंड की साहित्यिक संस्था वातायन ने इस वर्ष का वातायन सम्मान आदरणीय श्री संतोष चौबे को प्रदान किया।मुझे उस कार्यक्रम से जुड़ने आन लाइन जुड़ने का सौभाग्य मिला। उन्हें कोटिशः बधाई।इस वर्ष हमारे समाज के अनेक लेखकों कवियों की कृतियों का भी प्रकाशन हुआ। जिन पर फिर कभी चर्चा करूंगा उन सभी को अनन्त मंगल कामनाएं।खेल की दुनियां में भी अनेक सफलताएं समाज की प्रतिभाओं को मिलीं। हमारे इटावा के ही एक क्रिकेट खिलाड़ी चिरंजीव देवांश चतुर्वेदी को उत्तर प्रदेश टी 20 में गोरखपुर संभाग की टीम से खेलने का अवसर मिला। कानपुर सभा ने भी इसी साल एक स्तरीय सामाजिक क्रिकेट टूर्नामेंट कराया।जिसकी भी सर्वत्र सराहना रही।अन्य खेलों तथा विविध क्षेत्रों में भी हमारे समाज के खिलाड़ियों ने निश्चित रूप से परचम लहराया होगा जिनकी जानकारी हम तक नहीं आ सकी उन सभी को बधाई पूरे वर्ष की सौ प्रतिशत समीक्षा संभव ही नहीं है बहुत लिखा जाए फिर भी बहुत कुछ छूट ही जाता है। कभी कभी अपनी अपनी दृष्टि भी प्रभावी रहती है, जो विषय हमारी दृष्टि में रेखांकन योग्य नहीं है संभव है किसी पाठक की दृष्टि में उसका छूट जाना एक बड़ी चूक हो। इसी तरह जिन विषयों को लिखा गया है, वह किसी पाठक की नजर में उतना महत्वपूर्ण न हो। इसलिए हरि अनन्त हरि कथा अनंता की तरह तीन सौ पैंसठ दिन के प्रमुख घटनाक्रम को एक सीमित लेख में बांधना सहज नहीं है। यह केवल आंशिक दृष्टिपात भर है। इस साल को विदा होने में अभी इकतालीस दिन शेष हैं, इसलिए उत्तरादर्ध की सफलताएं अभी भविष्य के गर्भ में हैं।

गुरुदेव बाबा नीम करोली महाराज

* दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

फिरोजाबाद जिले के अकबरपुर क्षेत्र में दुर्गा प्रसाद शर्मा ने पुत्र प्राप्ति पर उसका नाम लक्ष्मण शर्मा रखा, लेकिन ईश्वर की महिमा वैराग्य में मन रमने पर घर बार छोड़कर वह बाबा लक्ष्मण दास हो गए। फिर बाबा ने मौरवी के बावरिया गांव (गुजरात) पहुंच कर कुछ वर्षों तक साधना करते हुए वहां हनुमानजी का मंदिर का निर्माण करने के बाद भम्रण पर निकल पड़े। एक बार बाबा लक्ष्मण दास फर्रुखाबाद से टूंडला जाती ट्रेन में बाबा को टी टी ने वगैर टिकट होने के कारण ट्रेन से उतार दिया, बाबा एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गये,उधर हरसंभव प्रयास के बाबजूद ट्रेन चल नहीं सकीं,तब सहयात्रियों के आग्रह पर रेलवे अधिकारियों ने बाबा से प्रार्थना की तो अनुनय विनय के बाद बाबा ट्रेन में सवार हुए तभी ट्रेन आगे बढ़ सकी, इसके बाद रेलवे ने वहां नीब करौरी नामक फ्लैग स्टेशन की स्थापना कर दी। इस करिश्माई घटना के बाद बाबा लक्ष्मण दास बाबा नीब करौरी (नीम करौली) हो गये। गांव वालों के अनुरोध महाराज जी ने नीब करौरी गांव को अपनी तपस्थली बनाया। वहां हनुमान मंदिर एवं आश्रम की स्थापना हुई।

बाबा प्रायः गंगा स्नान करने के लिए फर्रुखाबाद जाते थे, वहां फतेहगढ़ किले मे राजपूत रेजीमेंट का इंचार्ज कर्नल मैकन्ना साधु संतों से बहुत नफरत करता था, एक दिन बाबा उनके आंफिस

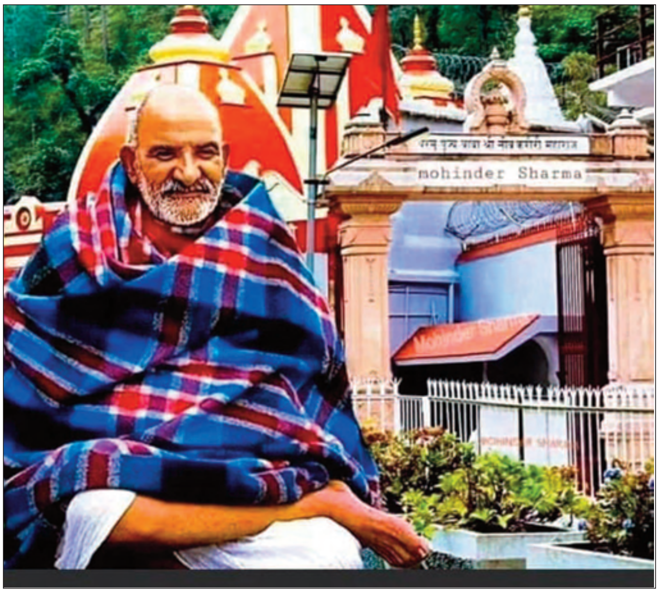

पहुंचे तो कर्नल गुस्से से आग बबूला हो गया, लेकिन बाबा जबाब में हंसते मुस्कुराते रहे, इसी मुस्कराहट ने जादू सा असर किया,तभी महाराज जी के स्पर्श मात्र से कर्नल मैकन्ना बाबा का पहला विदेशी शिष्य बन गया। कुछ वर्षों के बाद नीब करौरी गांव छोड़ने के साथ ही महाराज जी भम्रण एवं कृपा क्षेत्र काफी विस्तृत हो गया। यद्यपि गुरुदेव अपनी सिद्ध शक्तियों से ही दीन दुखी, रोगग्रस्त एवं जरुरतमंद की सभी समस्याएं हल करते थे, लेकिन प्रायः प्रतिष्ठित व्यक्तियों को ही सेवा का माध्यम बनाते थे। फिर कहते – –सब कुछ भगवान (हनुमान जी) ही करते है।उन्ही से प्रार्थना करो। अब तक बाबा की कल्याणकारी लीलाओं की चहुंओर चर्चा होने लगी थी। लाखों लोगों के लिए महाराज जी ही आराध्य देवता थे।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में कल्याण कारी लीलाएं करते हुए महाराज जी ने उत्तराखंड के हल्द्वानी – नैनीताल क्षेत्र को अपनी तपस्थली बनाया। प्रायः पर्वतीय जन साधु संन्यासी के प्रति बहुत सम्मान एवं आदर का भाव रखते हुए उनकी सेवा करते हैं। उत्तराखंड में अधिकांशतः शिव मंदिर एवं शक्ति पीठ ही थे। भगवान शिव के ग्यारहवें अवतार रुद्र हनुमान जी के सिद्ध भक्त महाराज जी ने हनुमान जी के मंदिर एवं मान्यता को स्थापित किया। बाबा जी की आसक्ति में लोग घर घर में कीर्तन एवं भण्डारे

करने लगे।

उत्तराखंड में गुरुदेव ने नैनीताल से लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर घाटी नामक स्थान पर बंजरी की धरकती पहाड़ी पर अपनी अलौकिक शक्ति से पहले हनुमान मंदिर का निर्माण किया, यह स्थान अब हनुमान गढ़ी के नाम से जाना जाता है।इसी तरह कई मंदिरों एवं आश्रमों की स्थापना से संबंधित बाबा जी के अवतारी स्वरूप अलौकिक तथा मनसा शक्ति की घटनाएं प्रचलित है।

बाबा नीब करौरी महाराज द्वारा स्थापित कई मंदिरों एवं आश्रमों में कैंची धाम आश्रम सबसे अधिक प्रसिद्ध एवं मान्यता प्राप्त है। ऐसा प्रचलित है कि सन् 1942 में पूर्णानंद नामक व्यक्ति नैनीताल से गेठिया जाते हुए रास्ते में रात होने पर भयभीत होकर परेशान था, तभी उन्हें कैंची के पास कम्बल लपेटे एक स्थूलकाय व्यक्ति मिला, जिसने तिवारी को आशीर्वाद देते हुए निडर होकर अपनी यात्रा जारी रखने को कहा,यही कम्बलधारी व्यक्ति महाराज जी थे। तिवारी ने बाबा जी से पूछा – महाराज जी अब आप के दर्शन कब होंगे, गुरुदेव ने तपाक से उत्तर दिया – बीस साल बाद,संजोग से सन् 1962 में जब बाबाजी सिद्धी मां के साथ रानी खेत से नैनीताल जा रहे थे, तभी बाबा जी बीच रास्ते कैंची में उतर गए, वहां पैरापेट (खण्ड की तरफ बनी चारदीवारी) पर बैठ कर सन् 1942 में मिले पूर्णानंद तिवारी को बुलाया,तब महाराज जी ने श्री मां के साथ नदी पार करके अपने पावन चरण वर्तमान कैंची आश्रम की भूमि पर रखे।(25 मई सन् 1962) अब प्रायः महाराज जी कैंची धाम आश्रम में ही प्रवास करते थे,15जून को हनुमान जी तथा अन्य प्रतिष्ठित मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ। 15 जून 1973 को विंध्यवासिनी तथा 15 जून 1974को वैष्णो देवी मंदिर की स्थापना कैंची धाम में हो गई है। आश्रम तथा मंदिरों के प्रति भक्तों के अंतर में भक्ति, निष्ठा, श्रद्धा, त्याग एवं सेवा के भाव स्पंदित होते रहे,इस हेतु गुरुदेव ने कैंची धाम में कई उत्सव जैसे 15 जून को प्रतिष्ठा दिवस समारोह के साथ ही गुरु पूर्णिमा, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी, दुर्गा पूजा तथा निरन्तर हवन की प्रथा प्रारंभ की,जो आज भी निरन्तरता से चल रही हैं। कैंची धाम का सबसे प्रमुख कार्यक्रम प्रति वर्ष 15 जून को प्रतिष्ठा दिवस समारोह वृहद पैमाने पर धूमधाम से मनाया जाता हैं, जिसमें हजारों देशी विदेशी भक्त शामिल होते हैं, शासन को भी भीड़ को कंट्रोल करने के लिए पुलिस भी लगानी पड़ती हैं। सौभाग्य से विगत फरवरी में हमको भी कैंची धाम में गुरुदेव बाबा नीम करौली महाराज जी का आशीर्वाद प्राप्त करने का मौका मिला। कैंची धाम आश्रम रेल एवं सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है, हल्द्वानी अल्मोड़ा मार्ग पर स्थित कैंची धाम (जिला नैनीताल) पर पड़ता हैं, वहीं रेल मार्ग पर काठगोदाम अंतिम स्टेशन हैं, वहां से सड़क मार्ग से जाना होता हैं। गुरुदेव के मार्गदर्शन में देश के विभिन्न क्षेत्रों में कई मंदिरों एवं आश्रमों का निर्माण किया गया, लेकिन उन्होंने किसी भी तरह उनमे अपना नामांकन नहीं किया। बाबा जी के विदेशी शिष्य डॉ रिचर्ड एलपर्ट (महाराज जी ने जिन्हें रामदास नाम दिया) ने अंग्रेजी में महाराज जी पर एक विशेष पुस्तक Miracle of Love लिखी, रामदास जी ने ही विदेश में गुरुदेव का पहला आश्रम न्यू मैक्सिको सिटी में बनाया है। महाराज जी की अलौकिक एवं मनसा शक्ति से जिन भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती हैं तो वे कैंची धाम आश्रम आने का हर संभव प्रयास करते हैं, लेकिन मान्यता है कि गुरु देव के आशीर्वाद से ही वहां पहुंचा जा सकता है।

बाबा नीब करौरी (नीम करौली) महाराज अपने महाप्रयाण की तिथि पूर्व में ही निश्चित कर चुके थे, उन्होंने अपनी भौतिक काया को अग्नि देव को अर्पण करने तथा भक्तों को समाधि स्थल के निर्धारण हेतु वर्ष 1973 के चैत्र नवरात्रि में नौ दिन का यज्ञ अनुष्ठान करवा दिया,जब 10 सितंबर 1973 की रात बाबा जी ने रामकृष्ण मिशन अस्पताल, वृंदावन में मृत्यु लोक से विदा ले ली। महाराज जी की मनसा शक्ति से प्रेरित होकर पागल बाबा की सलाह पर आश्रम में ही उसी यज्ञ स्थल पर बाबा जी की भौतिक काया को पंचभूत में विसर्जित कर दिया, फिर भक्तों ने वृंदावन में गुरु देव का समाधि मंदिर का निर्माण कर दिया।

आश्रम तथा मंदिरों के प्रति भक्तों के अंतर में भक्ति, निष्ठा, श्रद्धा, त्याग एवं सेवा के भाव स्पंदित होते रहे,इस हेतु गुरुदेव ने कैंची धाम में कई उत्सव जैसे 15 जून को प्रतिष्ठा दिवस समारोह के साथ ही गुरु पूर्णिमा, रक्षा बंधन, जन्माष्टमी, दुर्गा पूजा तथा निरन्तर हवन की प्रथा प्रारंभ की,जो आज भी निरन्तरता से चल रही हैं।

इसके चार दिन बाद जन्माष्टमी पर कैंची धाम आश्रम में रात्रि 12 बजे भगवान कृष्ण तथा बाबा जी की आरती होती हैं,उसी दिन बाबा जी का अस्थि कलश कैंची धाम लाया गया, बाबा जी की मनसा शक्ति से प्रेरित होकर श्री सिद्धी मां ने उसी स्थान पर स्थापित किया, जहां गुरुदेव निनिर्मेष दृष्टिपात करते थे, आज वही महाराज जी की मूर्ति के पास ही समाधि मंदिर स्थापित है। बाबा जी की अलौकिक शक्ति से प्रेरित होकर भक्तों ने वृंदावन तथा कैंची धाम के साथ ही अस्थि कलश के साथ लखनऊ एवं नीब करौरी आश्रम में भी समाधि मंदिर का निर्माण किया है।

कहते हैं –––––––

बंदउं गुरु पद कंज कृपा, सिंधु नररुप हरि।।
गुरुदेव बाबा नीब करौरी महाराज की जय

मेरे धर्म की गरीबी

- शुभांक चतुर्वेदी, फतेहगढ़

हर हर महादेव हर सप्ताह मंदिर के दर्शन और यह उद्घोष, मेरे जीवन का अविभाज्य हिस्सा बन चुका था। मेरी धार्मिक प्रवृत्ति मेरे विश्वास के तराजू को मेरी क्षमताओं के बजाये मेरी आस्था की ओर झुका रही थी। जब स्नातक के प्रथम वर्ष महाशिवरात्रि के दिन मैं मंदिर पहुँचा तो हमेशा की तरह कुछ दीन-हीन बच्चों ने मुझे घेर लिया और आस भरी नजरें मुझपर आ टिकीं। भौतिकवादी सोच ने मेरे मन पर काबू कर लिया था।

आँखों के पानी को नज़र अंदाज़ कर, कलश में पानी भरने की इच्छा ने मेरे जेब में पड़े 10 रुपये के नोट की और बढ़ते मेरे हाथों को रोक लिया था। वापस आते वक्त मेरी नजर उनमें से एक लड़के पर पड़ी, छरहरी काया, बिखरे बाल और सांवले से रंग वाला वह बालक उन सब बच्चों में सबसे कमजोर दिख रहा था। पर वह उन सभी से अलग ना ही कहीं भाग रहा था, और ना ही किसी से कुछ माँग रहा था, बस हाथ फैलाये मंदिर के मुहाने पर खड़ा था। उसमें कुछ तो था जो मेरी नजर उस पर जा टिकी थी। पर मेरे कदम मंदिर के अंदर बढ़ चुके थे.

अगले हफ्ते जब फिर मैं मंदिर पहुँचा तो वह लड़का मुझे उसी हालत में, उसी जगह खड़ा मिला, अटल, अडिग, व आशावान दो दिन की भूख एवं बदहाली उसकी काया पर साफ़ प्रदर्शित हो रही थी। यथार्थ तंगी या आस्था, कुछ भी कह लें, मेरे हाथ फिर रुक गए और कदम बढ़ चले थे. कई महीने बीत गए और उसकी हालत खराब होती गयी। गरीबी को सुलझाना एक कठिन मुद्दा है, लेकिन एक बच्चे की भूख नहीं। शायद मैं भी बदल गया था, आदत पड़ गयी थी, उसे वहीं देखने की, और कुछ न करने की पर न किये हुए कामों का अपराध भारी होता है और वह भार मुझे अपने कदमों में महसूस होने लगा था। शनैः शनैः उन मूर्तियों की भंगिमा के बजाये उस लड़के की वेदना ने मुझे अपनी ओर ज्यादा आकर्षित किया था।

एक दिन मैंने प्रण किया और उन 10 रुपयों के साथ कुछ और रुपये अपनी जेब में रख कर मंदिर पहुँचा। परन्तु आज उन चार महीनों से चला आ रहा क्रम टूट गया था और वह बच्चा मंदिर के मुहाने से नदारद था। उस शाम जब मैं लौटा तो हाथों में खाली कलश और पेशानी पर मायूसी के बादल लेकर लौटा। कुछ सप्ताह बाद मुझे वह बालक फिर दिखा, पर मैंने कभी भी उसके करीब जाकर उसकी हालत की वजह जानने की कोशिश भी नहीं की। वह तो शायद मेरे चेहरे और मन में चल रहे भावों से भी सर्वथा अनभिज्ञ था। उसके लिए तो मैं अभी भी उस विशाल बेदर्द संसार का एक हिस्स्सा, जिसको उसकी कोई परवाह ही नहीं थी. ऋतुओं की आवाजाही में श्रावण कब आ गए पता ही नहीं चला। महाशिवरात्रि के पहले सोमवार को, मैं अपने हाथ में भरे कलश और दस रुपये के नोट के साथ मंदिर गया। मैं उसे खोजने के लिए हड़बड़ा रहा था। जब मुझे अचानक एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति उसकी ओर बढ़ते हुए दिखाई दिया। जैसे ही उन्होंने उस लड़के के सर पर हाथ रखा, देख कर ऐसा लगा मानो उस स्पर्श ने उसके सारे दर्द खींच लिए हों। आँसू मोती बन छलक रहे थे। उस बुजुर्ग ने फिर जेब से 10 रुपये का सिक्का निकाला और उस लड़के को दिया। जलेबी, समोसों की खुशबू जब तक उस तक पहुँचती, उससे पहले ही वह लड़का भागता हुआ नुक्कड़ की दूकान पर आया, उन रुपयों में से 5 रुपये का दूध ले भीड़ के बीच से निकलता हुआ गर्भ गृह जा पहुँचा, कुछ देर गौर से देखा। फिर हाथ बढ़ा दूध चढ़ाया और हर हर महादेव का उद्घोष। मानों सालों की तपस्या पूरी हो गयी हो। फिर मदमस्त हो बचे हुए पाँच रुपये मुट्ठी में दबाये कहीं खो गया। उस घंटी भर दूध से मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया था। एका-एक गिरते हुए आँसुओं ने मुझे आत्म बोध करा दिया था। मानव मूल्यों से परे अपनी सोच और प्रवृत्ति पर आज मुझे घिन आ रही थी। मैंने अपने धर्म का स्वार्थिक स्वरुप जो बनाया था। वह उस बालक के पवित्र निःस्वार्थ धर्म से आज हार चुका था। आत्मग्लानि के नव स्वरुप ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया की मैं यहाँ क्यों आता हूँ, उद्देश्य क्या है, मन की शांति, निःस्वार्थ भक्ति या आकांक्षाओं की पूर्ति की भीख।

प्रेम व करुणा का मूल्य हीरे जवाहरात से भी अधिक होता है उस बुजुर्ग की पूजा पूर्ण हुई, चित्त को शांति भी मिली, पर भोग, बेहाल, अर्धनग्न, भूखे ईश्वर का लगा था. मेरे पास सब कुछ होते हुए भी मैं गरीब था और वह बालक, अमीर आज भी मैं उस प्रश्न के उत्तर को खोज रहा हूँ, कि क्या वह मेरे धर्म की गरीबी थी या फिर उस गरीब का धर्म।

अयोध्या दीपोत्सव

** रजत त्रिलोकी नाथ, (होलीपुरा/कोलकाता)

शनिवार 11 नवम्बर 23 को हनुमान जयंती पर अयोध्या में दीपोत्सव का साक्षी बनने से ऐसा लगा कि साक्षात भगवान राम से मिलने का सौभाग्य हो गया। राम शरद कोठारी स्मृति संघ कोलकाता का सचिव होने के कारण इस उपलब्धि का अवसर मिला। सोमवार 22 जनवरी 2024 को नवनिर्मित मंदिर में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में 15 जनवरी से 15 फरवरी 2024 तक हमारी संस्था का स्टाल भी लगेगा। दीपोत्सव के शुभ अवसर पर निर्माणाधीन मंदिर, अस्थायी मंदिर, हनुमान गढ़ी सहित सम्पूर्ण अयोध्या की सजावट का वर्णन कल्पना व शब्दों में संभव नहीं हैं।

त्रेता युग में प्रभु पुष्पक विमान से अयोध्या पहुंचे थे, आज प्रभु राम, मां सीता, भाई लक्ष्मण हेलीकॉप्टर से पहुंचे, राज्यपाल आनंदी बेन, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ ही ट्रस्ट के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया, यही पर प्रभु राम का भाई भरत के साथ परिवारिक सदस्यों से भावपूर्ण मिलन हुआ।भरत मिलाप के बाद मां सीता सहित चारों भाई रथ पर सवार होकर राम दरबार (राम कथा पार्क) के लिए रवाना हुए, रामरथ को खींचने में राज्यपाल, मुख्यमंत्री सहित संतों एवं मंत्रियों ने भी भागीदारी निभाई। चारों तरफ जय श्रीराम, जय सियाराम, बजरंगबली की जय के नारों से आकाश तक गूंज उठा था। इस आयोजन के दौरान हेलीकॉप्टर से पुष्प वर्षा भी होती रही, राम दरबार के भव्य आयोजन के साथ ही राम पथ पर शोभायात्रा भी निकाली गई, जिसमें 18 रथों पर झांकियों में रामकथा के प्रसंगों का चित्रण विभिन्न क्षेत्रों से आए लोक कलाकारों ने किया, जिसमें सुक्खन का आदिवासी नृत्य, मणिपुर का बसंत रास, हिमाचल के सिरमौर नाटी, उड़ीसा के दाल खाई नृत्य सहित कई झांकियां उल्लेखनीय रही।लता मंगेशकर चौक तक 4 किमी का रास्ता तय करने में शोभायात्रा को लगभग चार-पांच घंटे लगे, बताया गया कि नेपाल, श्रीलंका से भी कुछ कलाकार आये हैं। शोभायात्रा के दौरान दोनों तरफ लाखों लोग खड़े होकर पुष्प वर्षा भी करते रहे। इससे पूर्व अयोध्या में फिल्मी अभिनेताओं सहित विभिन्न क्षेत्रों से आए कलाकारों ने स्मरणीय दस दिवसीय रामलीला का आयोजन किया गया था।

रामायण में तुलसी दास जी ने प्रभु श्रीराम के अयोध्या वापसी के प्रसंग पर लिखा है --

रिपु रन जीति सुजस सुर गावत।
सीता सहित अनुज प्रभु आवत।।
सुनत बचन बिसरे सब दूखा।
तृषावंत जिमि पाइ पियूषा।।

तभी हम मानसिक रूप से त्रेता युग के राम रावण युद्ध में रावण वध करके लंका विजय के पश्चात प्रभु राम मां सीता भाई लक्ष्मण की अयोध्या वापसी के चित्रण में डूब गए, तभी एक साथी ने टोका कहां खो गए कि अब राम की पैड़ी चलना है, दिन ढलने से पहले ही राम की पैड़ी के साथ ही सरयू के दोनों तटों पर दीप प्रज्वलित होने लगें, इस वर्ष 22.23 लाख दीप प्रज्वलित कर नया कीर्तिमान स्थापित कर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया, सन् 2017 में एक लाख से शुरू हुआ दीपोत्सव में 2022 में 15.78 लाख दीप प्रज्वलित किए गए थे।राम की पैड़ी पर दीपोत्सव की छटा के साथ भव्य लेसर शो का अकल्पनीय आनंद इस जीवन की अवर्णनीय स्वर्णिम अनूभूति थी।

दीपोत्सव की अंतरराष्ट्रीय छवि को मान्यता देते हुए 54 देशों के राजनयिक अयोध्या में मंगल भवन अमंगल हारी कार्यक्रम के गवाह बने। इस आलेख को तैयार करने में समाचार माध्यमों के वर्णन से भी सहयोग लिया गया है। मुख्यमंत्री योगी ने अपने संबोधन में राम मंदिर आंदोलन को सदी का सबसे बड़ा सांस्कृतिक आंदोलन बताते हुए कहा 22 जनवरी 24 को 500 वर्ष बाद जब रामलला अपने भव्य मंदिर में विराजेंगे, उस दिन वही माहौल होगा जैसा तब था जब राम अयोध्या लौटे थे। उन्होंने अयोध्या को अंतरराष्ट्रीय धार्मिक नगरी की रुप में विकसित करने का दावा दोहराया, लेकिन योगी ने आगे कहा कि इसके साथ ही अयोध्या वासियों की जिम्मेदारी बढ़ गई है, उनके आचरण एवं व्यवहार से यहां आने वाले देशी विदेशी पर्यटकों को रामराज्य का अनुभव होना चाहिए। योगी ने अपने संबोधन में कई बार मानस की चौपाइयों को उद्धृत करते हुए कहा -- प्रभु श्रीराम ने कहा है-

अवधपुरी सम पिय नहीं सोऊ।यह पसंग जाने कोउ कोऊ।।

दीपावली के साथ विगत सात साल से भव्य दीपोत्सव ने अयोध्या को विश्व में चर्चित एवं प्रतिष्ठित किया है। प्रभु राम और रामराज्य भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों के अतुल्य प्रतीक हैं। नवनिर्मित राम मंदिर में रामलला के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा रामराज्य को साकार करने की दिशा में ही एक कदम साबित होगा। अयोध्या के लिए कहा गया है कि -------

अति प्रिय मोहि इहां के बासी।
मम धामदा पुरी सुख रासी।।
हरषे सब कपि सुन प्रभु बानी।
धन्य अवध जो राम बखानी।।

मसाल दान में छिपे सेहत के राज

प्रत्येक घर में रसोईघर एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक स्थान होता है और उसमें यदि मसाल दान का डिब्बा ना हो तो रसोई का कुछ अर्थ ही नहीं। घर में जो भोज्य पदार्थ बनाते हैं वह इस मसाल दान डिब्बे के बिना स्वादिष्ट नहीं हो सकता।

यह भोजन स्वादिष्ट तो बनाता ही है साथ में यह हमारे घरेलू दवाखाने का काम भी करता है। मसाले का डिब्बा छोटी-मोटी बीमारियां दूर करने में सहायक होता है। हम इसे प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी कह सकते है। मसाल दान में छिपे ऐसे ही सेहत के राज हम सभी से साझा कर रहे है।

हल्दी

हल्दी एंटीबायोटिक का काम करती है। खांसी में एक चम्मच हल्दी तवे पर हल्की सी भूनकर उसे शहद मिलाकर चाट ली जाए तो खांसी में आराम मिलता है। एक चम्मच हल्दी एक गिलास गर्म दूध में घोलकर पीने से भी सर्दी की खांसी में आराम मिलता है।

पिसी हुई हल्दी और बारीक पिसा हुआ सैंधा नमक उसमें दो बूंद सरसों का तेल मिलाकर दांतों पर मलने से मसूड़े स्वस्थ होते हैं तथा उसकी सूजन भी चली जाती है। हल्दी की तासीर गर्म होती है, इसलिए प्रसूति काल में भी लड्डू हो या हरीरा दोनों में हल्दी का प्रयोग होता है। पैर में कही छोटी सी चोट लग जाए हल्दी भरने से ठीक हो जाती है। हल्दी में चोट ठीक करने के एन्टी सेप्टिक गुण होता है। एक चम्मच हल्दी एक कप पानी में तथा एक चम्मच अजवाइन मिलाकर उबालें। आधा कप पानी रह जाने पर इसे पी लें खांसी ठीक हो जाएगी। इसे कम से कम 5 या 6 दिन तक अवश्य पिएं। जीरे का प्रयोग हमारे भोज्य पदार्थ में बधार लगाने के काम तो आता ही है, साथ ही एक चम्मच कच्चा जीरा पानी से निगल लेने से पतले दस्त बंद हो जाते हैं। एक चम्मच मेथी रात में पानी में भिगोने के बाद सुबह चबा चबा कर खाने से मधुमेह में लाभकारी होती है। मैथी खाने से घुटनों का दर्द भी बंद हो जाता है।

अजवाइन

अजवाइन पाचक के रूप में प्रयोग में आती है। एक राई चम्मच अजवाइन खाली पेट सुबह पानी से निगलने से गैस का बनना बंद हो जाता है (हफ्ते में एक बार ऐसा किया जा सकता है।) मीठी नीम की पत्ती और अजवाइन बराबर मात्रा में लेकर पीसकर कनपटी पर लेप करें नकसीर बंद हो जाएगी अर्थात गर्मी में नाक से निकलने वाला खून बंद हो जाएगा। पूड़ी के आटे में अजवाइन डालकर मलने से पूरी का पाचन शीघ्र होता है। प्रसूति काल में अंगारों के ऊपर अजवाइन डालकर उसका धुआं शरीर पर लिया जाए तो यह स्वास्थ्य क लिये लाभदायक होता है। यदि दांत दर्द हो तो एक छोटी सी पोटली में अजवाइन बांधकर उसे तवे पर गर्म कर गाल पर सिकाई करने से दांत दर्द बंद हो जाता है। मोच आने पर सेंधा नमक एवं अजवाइन की पोटली बनाकर सेंकने पर लाभ मिलता है।

मोटी सौंफ

बदहजमी के कारण होने वाले पेट के दर्द में मोटी सौंफ खाने से लाभ प्राप्त होता है।

दालचीनी

- दालचीनी का एक टुकड़ा, 8 लोग, 8 काली मिर्च तवे पर भूनकर बारीक मिक्सी में पीस लें या उसे कूट लें। यह मसाला एक चुटकी शब्द के साथ खाने से खांसी ठीक हो जाती है।

बड़ी इलायची

- बडी इलायची तोड़कर अंदर के उसके बीज तवे पर सेंककर उसे शहद के साथ खाने से खांसी ठीक हो जाएगी।

यदि एसिडिटी या जलन हो रही हो तो दो लोग चूसने से जलन बंद हो जाएगी।

राई तथा थोड़ी हल्दी पानी में पीसकर उसे थोड़े से पानी में घोलकर तथा नमक डालकर धूप में रख दें। इस पानी का सेवन करने से बदहजमी दूर हो जाती है तथा निरंतर पीने से पेट के कीड़े भी मर जाते हैं।

- साभार ब्रज की रसोई पुस्तक

थाली में हो पोषक आहार

- श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी, भोपाल

मिलेट ईयर 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट ईयर घोषित किया गया है और इसकी आवश्यकता भी थी। मिलेट ईयर अर्थात मोटा अनाज वर्ष अब समापन की ओर है। वर्ष तो समाप्त हो जाएगा, एक प्रश्न उठता है क्या? इसके साथ इसकी आवश्यकता भी समाप्त हो जाएगी। यह एक समसामयिक समस्या एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है जो एक स्वस्थ मनुष्य को लंबे समय तक स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। वर्तमान गढो भूत से अनुभव लो तथा भविष्य की योजनाएं बनाओ। यह कथन पूर्णता इस अभियान पर सटीक बैठता है। भारतीय जीवन की पुरातन शैली पूर्णतः वैज्ञानिक थी। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हमने बहुत कुछ गँवाया है।

उसमें एक स्वास्थ्य संबंधी महत्वपूर्ण विचार भी था। हम अपनी पुरातन जीवन शैली पूर्ण तरह बिसरा बैठे, खो बैठे, भूल गए कुछ भी समझ ले। वर्तमान समय में हमारे भोजन की थाली से पोषक तत्व तिरोहित हो गए। रह गए हैं, वर्तमान फूड में पिज़्ज़ा बर्गर जिन्हे हमारे घर के बच्चे बहुत पसंद करते साथ में बड़े भी। कॉलेज जाने वाले किशोर और किशोरिया का एक मनपसंद भोजन है। भूख लगे 2 मिनट में चाऊमीन तैयार लेकिन हमें यह नहीं मालूम यह चाऊमीन हमारी आंतों के अंदर जमकर हमारी पाचन शक्ति को कमजोर करती है। यह ठीक है समय के साथ चलना पड़ेगा, लेकिन साथ में हमें विचार भी करना पड़ेगा कि इसका हम कितना उपयोग करें।

आज भी ग्रामीण भोजन की थाली में बहुत से पोषक तत्व अभी भी है, लेकिन गांव में भी आधुनिकता की दौड़ पहुंच गयी। अब खान–पान के मामले में वह भी आधुनिकता की ओर चल पड़े हैं। अर्थ युग में सब कुछ बदल दिए हमारी जीवन शैली हमारा आहार, हमारा आचरण, हमारी सोच, हमारा रहन–सहन सभी में तेजी से परिवर्तन आया है। पैसा कमाने की लालच में हमारे किसान भाइयों ने भी मोटा पर अनाज उगना बंद कर दिया। उन्हें भी चाहिए भरपूर पैसे अपनी फसल के।

समय बदला, सभी बदले। हरित क्रांति अपने साथ में गेहूं और चावल लेकर आयी। क्रांति ने संपूर्ण रूप दिखाया और अधिकतर किसान गेहूं और धान का उत्पादन करने लगे। जो उगेगा, वही मिलेगा लोग वहीं खाएंगे, क्योंकि हर स्थान पर माँग और पूर्ति का सिद्धांत लागू होता है। मोटा अनाज गरीबों का अनाज कहलाने लगा। कम पानी, कम लागत में उगने वाला मोटा अनाज अकाल अनाज कहलाने लगा। जबकि इन अनाजों की विशेषता है यह कम लागत में ज्यादा उत्पादित होते हैं।

मोटा अनाज स्वास्थ्य का खजाना

इश्क खजाने में आते हैं ज्वार बाजरा ,मक्का ,राजी ,कोदो कुटकी,कोणी, हरि कांगड़ी, समा का चावल,जौ ,मक्का। यह इन अनाजों का केवल आता ही नहीं बनता आजकल तो बिस्कुट टोस्ट तथा उबालकर नाश्ते के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

स्वास्थ्य का खजाना क्यों

उपरोक्त मोटे अनाजों की खेती भारत में सबसे अधिक एवं अफ्रीका तथा अन्य देशों में भी इनकी फसलें होती हैं।

बाजरा

भारत उपमहाद्वीप की अतिरिक्त अफ्रीका में बाजरे की खेती होती है। इसकी तासीर गर्म होती है इसलिए इसका सेवन सर्दियों में किया जाता है। यह शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है जो की सर्दी के मौसम में बहुत आवश्यक होती। इसका प्रयोग चपाती, पराठा, पुरी के अतिरिक्त विभिन्न व्यंजनों में भी किया जाता है। गांव में अभी इसका प्रयोग ज्यादा होता है, जो बाजरे के गुण को जानते हैं, उन्होंने भी बाजार में खाना प्रारंभ कर दिया। बाजरे की खिचड़ी बाजरे का भात, बाजरे के चूरमे के लड्डू, तिल ग्राम डालकर बाजरे की रोटी आदि बनाकर इसका प्रयोग किया जाता है।

100 ग्राम बाजरे में,11;6, प्रोटीन

कार्बोहाइट ।। ।।,67;5

कैरोटीन 132 मिली.ग्रा.

विटामिन B6, विटामिन B3 विटामिन बी2 के साथ कैल्शियम जिंक आयरन सभी कुछ प्राकृतिक रूप से मिलता है। बाजरे के पाचन में 6 से 7 घंटे लगते। जिसके कारण व्यक्ति का वजन भी कम होता है। शर्करा बहुत कम होती तथा फाइबर या रेशा अधिक होता है जो मधुमेह के रोगियों के लिए लाभदायक है। इसके आटे से बिस्किट केक पापड़ सिमई बनाई जा सकती है।

ज्वार

भारत दुनिया का सबसे बड़ा ज्वार का उत्पादक वाला क्षेत्र है।

यह घास प्रजाति के पौधे कहलाते हैं। यह भी रेशेदार अनाज की श्रेणी में आता है एवं पाचक है। अघुलनशील आहार का अनुपात अधिक होता है। मधुमेह में बहुत अधिक लाभदायक है। मधुमेह के रोगियों के लिए आजकल इसके बिस्किट भी बाजार में आ गए हैं।

कुटकी

कुटकी आयरन का एक बहुत बड़ा स्रोत है। कैंसर तथा अल्सर का प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाने वाला गैस्ट्रो सुरक्षात्मक, कोलेस्ट्रॉल कम करने वाला है।

रागी

राजी में फाइबर या रेशों की मात्रा अधिक होती है। टैनिन की मात्रा अधिक होती। रागी का आटा भी बनाया जा सकता है तथा सबूत भी पका कर खाया जा सकता है सबसे अधिक कैल्शियम रागी के अंदर होता है। 100 ग्राम राजी में 300 से 350 ग्राम तक कैल्शियम होता है।

गुण सम्पन्नता

मोटे अनाज अकाल के अनाज कहे जाते हैं। इसके पीछे का कारण इन अनाजों की उत्पत्ति में पानी कम लगता है। इसलिए इन्हें काल का अनाज कहा जाता है।

1- मानव शरीर को पूरी तरह से स्वस्थ रखने के लिए सारे तत्व इन अनाजों में उपस्थित रहते हैं।

2- प्राकृतिक रूप से विटामिन प्राप्त होते हैं।

3- एक विशेष बात तथा महत्वपूर्ण बात यह होती है यह फसले कार्बन डाई ऑक्सीजन ग्रहण करती हैं तथा ऑक्सीजन को छोड़ती हैं। रात के समय भी यह ऑक्सीजन को छोड़ती है।

4- खाद की बहुत कम आवश्यकता होती है।

5- यह सभी तरह की जलवायु में उत्पादित हो जाते हैं ठंडे प्रदेश तथा गर्म प्रदेश दोनों में इनका उत्पादन होता है।

6- इन अनाजों में संघनित टैनिन होता है। जो इन्हें खराब होने से बचाता है तथा उगाने में सहायक होता है।

7- यह फाइबर के स्रोत होते हैं तथा शर्करा बहुत कम होती है।

8- में अनाजों की फसल उगाने में लागत बहुत कम लगती है तथा उत्पादन लागत से बहुत अधिक होता है।

9- एंटी ऑक्साइड होता है जो कोलेस्ट्रॉल कम करता है हृदय रोग से बचाते है।

10- पाचन में अधिक समय लगता है जिससे भूख कम लगती है मोटे व्यक्ति को का यह वजन कम कर सकते हैं।

11- मधुमेह कैंसर थायराइड अल्सर प्रतिरोधी क्षमता होती है पेट की बीमारी से छुटकारा दिलाते हैं।

प्रयोग : एक ही अनाज का प्रयोग निरंतर नहीं करना चाहिए। कुटकी, कोदो, ज्वार, रागी दो-दो दिन के बाद प्रयोग करना चाहिए। अर्थात बदल बदल कर खाना चाहिए। 20 दिन के अंदर आप स्वयं अपने शरीर में अंतर महसूस करेंगे। आपके शरीर में स्फूर्ति तथा ताजगी महसूस करेंगे। खायें मोटा अनाज थाली में रहे पोषक आहार।

बोलचाल भाषा में शालीनता लाएं

- शैलेन्द्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

आज के समय में बोलचाल की भाषा सामाजिक परिवेश में बहुत महत्व रखती है। कौन सी भाषा में कौन बुरा मान जाए , कहना मुश्किल है।पर लोग इस बात को कम ही समझते हैं।सहज प्रतिक्रिया में कभी ऐसा जबाव निकल जाता है जो रिश्तों में खटास में डाल देती है। समाज के संस्कारों में परिवर्तन तो आया है ।कम आयु के लोग बड़ों को सम्मान नहीं देते जो उन्हें मिलना चाहिए । सम्मान जनक शब्द का प्रयोग करना तो वे भूल से गए हैं आपस में तू तड़ाक जैसे शब्दों का प्रयोग बढ़ जाना बड़े बूढ़े को अखरता है। पर वे कुछ कहते नहीं है। उन्हें डर रहता है कि कुछ कहेंगे तो उल्टा और कुछ बुरा सुनने को मिल सकता है।

बोलचाल में गालियों का प्रयोग बहुत बढ़ गया है। बच्चों में शुरू से यह संस्कार डालना चाहिए कि गालियों का प्रयोग आपस में न करें। मोबाइल आज की बहुत बड़ी उपलब्धि है। इस पर कभी कभी सही भाषा नहीं बोली जाती। कुछ लोग बातचीत की रिकार्डिंग कर लेते हैं इससे दुश्मनी और भी बढ़ जाती है। इसीलिए मोबाइल पर जो भी बोला जाए वह बहुत सोच समझ कर बोला जाए।इसी में बेहतरी है। वर्ना कभी कभी एक वाक्य या एक शब्द घातक सिद्ध हो सकता है। सारांश यह है कि जीवन में शालीनता बहुत जरूरी है आप अपनी बात प्रतिक्रिया में न दें वह ज्यादा बेहतर है। और यदि अपनी बात सोच समझ कर शालीनता के साथ कहें तो अधिक बेहतर होगा। वहीं लोग सुखी रहते हैं जो अपनी बोलचाल से सामने वाले को सुखी रख सकते हैं। इससे बोलचाल की भाषा का बहुत बड़ा योगदान है।

समीक्षाः ब्रज की रसोई

- डॉ ओंकार नाथ चतुर्वेदी, कोटा

आस्था, धर्म और सामाजिकता की सांस्कृतिक झांकी है ब्रज की रसोई जो संस्कारों से संपन्न माथुर चतुर्वेदी समाज के अंतरंग पक्ष, रसोई घर को समाज के सामने प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक सांस्कृतिक रूप से विकसित माथुर चतुर्वेदी समाज की झांकी प्रस्तुत करती है जो आज भी उसके अतीत से वर्तमान को जोड़े हुए है। यह संकलन हर पाठक को अतीत के सामने खड़ा कर देता है जब सुबह आंगन बुहारती हुई मां, नानी, दादी प्रभातियाँ गाकर भोर को जगाया करती थीं– उठ गोपाल प्रातः काल, निरखों मुख तेरो, पीछे कछु काज करों, यही नेम मेरो।

फिर पृष्ठभूमि में रसोई से बहू का एक स्वर उभरता था अम्मा जी, आज क्या बनेगा? तब अम्मा द्वारा पूछा जाता था आज कौन सा वार है? कौन सी तिथि है? कौन सा त्यौहार है? और इस कथन के साथ ब्रज की रसोई सरकार हो उठती थी। संपादिका डॉ विनीता चौबे ने ब्रज की रसोई के माध्यम से सोलह संस्कारों से संपन्न परिवार में मनाए जाने वाले त्योहारों के पकवानों से सुसज्जित झांकी प्रस्तुत की है। समस्त माथुर चतुर्वेदी समाज की सांस्कृतिक धरोहर है। ब्रज की रसोई जिसमें संपादक ने अतीत को सुरक्षित करके रख दिया है। तब रसोई गंध आती थी, कंठ चहकते थे। बचपन किलकारी भरता था, तब घर में घुसने वाला व्यक्ति लंबी सांस लेता हुआ कहता था वाह! क्या खुशबू है! क्या हलवा बना है। या पूछता था समोसे, गूंजे, गाजर का हलवा, खीर, झोर भात, आदि में से क्या बन रहा है?

संपादिका डॉ विनीता चौबे ने बड़े आत्मीय ढंग से रसोई की गंध, त्यौहारों पर बनाए जाने वाले व्यंजन और घर में डाले गए अचारों का संकलन एवं संपादन कर एक स्मरणीय संग्रह पुस्तक का रूप दिया है. जो भावी पीढ़ी के लिए समाज की धरोहर होगा। सामान्य पुस्तकों का जीवन कुछ घंटे और महीनों का होता है लेकिन यह संकलन दीर्घजीवी है।

आज जब महानगरों में टू रूम फ्लेट थ्री रूम फ्लैट में एकल परिवार में रहने की आदत बन गई है तो ब्रज की रसोई कहीं खो गई है। खूबसूरत ढंग से भक्तिभाव, प्रेमरस में डूबे सात्विक समाज की रसोई की गंध को स्मरणीय बना दिया है। डॉ चैबे ने सामग्री का कुशल संपादन किया है। संकलन सामग्री की सहयोगी लेखिकाओं को सादर प्रणाम करता हूं जिनके सहयोग से समाज का अतीत संवारा गया है जिसकी उजली रेखा आज की रसोई घर में गंधा रही है।

अरे हाँ, डॉ चौबे ने हर परिवार में आंगन में मांडे जाने वाले चौक और अन्य मांडनों को अलंकृत वस्त्र पर छापा कर हर सांस्कृतिक परिवेश को जिंदा कर दिया है। यह एक संग्रहणीय संपादन है। संपादिका को उनकी उपलब्धि एवं श्रम के लिए आभार व्यक्त करता हूं। यह पुस्तक मोटे चिकने कागज पर छपी है। मंगाकर परिवार के लिए सुरक्षित रखिएगा।

आधार कार्ड की आवश्यक नियम

आज के समय में आधार कार्ड हमारे पहचान है यह तो हम सब जानते ही हैं लेकिन इससे जुड़े कुछ नियम भी हैं जिन्हें जानना हमारे लिए बहुत आवश्यक है। पैन कार्ड को आधार कार्ड से जोड़ने के उपरांत यह एक बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज बन गया है इसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है तथा इसके लिए निम्न नियमों का पालन आवश्यक है

1. अगर आपको आधार कार्ड बनवाए हुए 10 साल या उससे अधिक हो गए हो तो अपडेट कर लीजिए नियम के अनुसार 10 साल में एक बार आधार कार्ड को अपडेट करना जरूरी है इसके लिए आप hhttp://uidai.gov.in पर जाकर इसे ऑनलाइन अपडेट कर सकते हैं।

2. अगर आधार कार्ड पर नाम गलत हो गया है या अक्षरों में गड़बड़ी हो गई है तो आप आधार सेंटर जाकर इस बदलवा सकते हैं लेकिन आपके जीवन काल में सिर्फ दो बार ही आधार में आपका नाम बदला या ठीक किया जा सकता है।

3. अगर आधार कार्ड में जन्मतिथि गलत हो गई हो तो इसे भी स्थानीय आधार सेंटर जाकर ठीक कराया जा सकता है लेकिन इसके लिए भी आपको अपने जीवन काल में सिर्फ एक बार ही मौका मिलेगा।

4. आधार कार्ड पर यदि आपका लिंग गलत दर्ज हो गया है तो यूआईडीएआई के नियमों के अनुसार इसमें बदलाव किया जा सकता है, लेकिन जीवन काल में सिर्फ एक बार ही इसे बदला जा सकता।

5. डेमोग्राफिक जानकारी में बदलाव करना है जैसे कि मोबाइल नंबर, ईमेल, बायोमेट्रिक तो इसके लिए भी आपको आधार सेंटर ही जाना होगा।

6. अगर आप अपने आधार कार्ड में अपने घर का पता बदलवाना चाहते हैं तो यूआईडी आई की वेबसाइट पर जाकर खुद से ऑनलाइन अपडेट कर सकते हैं यह परिवर्तन आप जितनी बार चाहे उतनी बार घर का पता बदलने पर परिवर्तन कर सकते हैं। इसकी कोई सीमा नहीं है। घर का पता, ईमेल आईडी, मोबाइल नंबर और फोटो को बार-बार अपडेट कर सकते हैं।

सहयोग के लिए आभार तथा निवेदन

दिनाँक 20.11,2023 अन्नपूर्णा सहायता हेतु प्राप्त सहयोग राशि

सजातीय बान्धवों को एक सांकेतिक सहयोग राशि रु २४००० वार्षिक (रु २०००/ – प्रति माह के हिसाब से) श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा समाजहित के लिए बांधवों के अमूल्य सहयोग से अन्नपूर्णा एवं छात्रवृत्ति सहायता प्रदान की जा रही है।

वर्तमान में 42 परिवारों को यह सहायता त्रैमासिक जनवरी, अप्रैल, जुलाई तथा अक्टूबर के प्रथम सप्ताह सीधे उनके बैंक खाते हस्तांतरित की जा रही है । आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग के लिए सादर आग्रह है। आपसे अनुरोध है स्वेच्छा अनुसार किसी भी राशि का सहयोग करने की कृपा करें।

निम्नांकित सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि मैं वित्तीय वर्ष 2023 – 24 में अपना अमूल्य योगदान किया है :–

16. प्राची चतुर्वेदी पुत्री श्री भानु प्रकाश चतुर्वेदी कोटा के जन्मदिन के अवसर पर 2100/–
17. श्री सुब्रत चतुर्वेदी (नोएडा) – Rs 25,000/–
18. डॉ राकेश चतुर्वेदी (मथुरा) Rs 11000/–
19, स्व विजय चतुर्वेदी,योगी जी सुपुत्र स्व नरेशचंद्र जी (होली पुरा/कोलकाता) की स्मृति में श्री मदन चतुर्वेदी, संरक्षक महासभा द्वारा रु 24000/–
20. डॉ प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली) Rs 12,000/ –
21. श्री सावन चतुर्वेदी (आगरा) – Rs. 2100/–
22. श्री भुवन चतुर्वेदी (मैनपुरी / गुड़गाँव) पिता श्री की पुण्य तिथि पर 12000/–
23. श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (फरौली/ ग़ाज़ियाबाद) – Rs 11000/–
24. श्री ऋषभ चतुर्वेदी (कमतरी/ देहरादून) ने अपने सुपुत्र श्रीं शलभ जी , के एक प्रसिद्ध कंपनी (MNC) में महा प्रबंधक के पद पर पदोन्नति के उपलक्ष्य में – Rs 11,000/–
25. अपने पिता श्री दया शंकर जी (होलीपुरा / कानपुर) की पुण्य तिथि की स्मृति में श्री राजीव जी संजीव जी एवं समस्त कक्का परिवार द्वारा – Rs 24,000/–
26. अपनी पत्नी स्वर्गीय श्रीमती शीला जी की स्मृति मैं श्री कृष्ण कान्त जी (होलीपुरा / लखनऊ) द्वारा

Rs 12,000/–

27 .स्व. हेमचंद जी (पुरा/भोपाल) की स्मृति में डॉ. दिवाकर नाथ चतुर्वेदी द्वारा Rs 12,000/– ।
28. गुप्त दान – Rs.12,000/–
29. स्व. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (कछपुरा/भोपाल) की प्रथम पुण्यतिथि (09/11/23) के अवसर पर श्रीमती शारदा चतुर्वेदी द्वारा 5000/–
30. डॉ राजेंद्र प्रसाद चतुर्वेदी जयपुर द्वारा अपने पूज्य पिताजी श्री रेवती रमण जी चतुर्वेदी (पूर्व अध्यक्ष कोटा शाखा सभा)की पुण्य स्मृति में – Rs. 24,000/–
31. श्री सुमन्त चतुर्वेदी (आगरा/ मुंबई) द्वारा अपने पिता श्री स्व नरेश चंद्र जी तथा माता श्रीमती हीरा देवी की स्मृति मैं Rs. 5001/–
32 . Rs 12000/– बाबू ओंकार नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) की स्मृति मैं , Rs 12,000/–, श्री प्रभात चंद्र जी (इटावा) तथा Rs 12,000 /–, श्री सतीश चंद्र जी की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी @ चुन्ना के माध्यम से
34. श्री विवेक चतुर्वेदी (अध्यक्ष, मुंबई समुदाय) की पुत्री कु. डॉ. श्रुति चतुर्वेदी प्लास्टिक सर्जरी के लिए एन.ई.ई.टी, एस.एस. एग्जाम 2023 द्वारा चयन होने के अवसर पर Rs. 42000/–

कुल प्राप्ति सहयोग राशि – 4,49,752/–

सहयोग के लिए सभी का आभार* वित्तीय वर्ष 2023–24 में अब तक बैंक मैं सीधे स्थांतरित छात्र वृति सहायता

वित्तीय वर्ष2023–24 मैं अब तक बैंक खाते मैं स्थांतरित अन्नपूर्णा सहायता, अन्नपूर्णा योजना मैं अभी तक

कुल वितरित सहायता Rs.7,13.000/–

कुल राशि Rs. 7,77,900/– अब तक हस्तांतरित की जा चुकी हैं। अभी जनवरी २०२४ मैं भी 2,56,700/– कीं सहायता जानी बाक़ी है। सभी से निवेदन है कि इस अंतर को पूरा करने मैं सहयोग करने की अति शीघ्र कृपा करें । समाज के लिए सहयोग देने वाले सभी को विनम्रतापूर्वक आभार *

सहयोग राशि भेजने के लिए :–

महासभा खाता विवरणः

डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी, अध्यक्ष MoB. : 9873395001

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री, Mob. 9871170559

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED

10292296@cbin

BHIM UPI

सभी संजोलो थाती अपनी

- भरत चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल)

लोकप्रिय चतुर्वेदी चंद्रिका के माध्यम से, मैं अपना आग्रह सभी बन्धुओं से करता हूँ, अपने अपने पूर्वजों की थाती को अब सुरक्षित करने का समय है। भदावर क्षेत्र में किसी समय चतुर्वेदियों के चालीस गाँव थे। जहाँ चतुर्वेदी निवास करते थे। धीरे-धीरे गाँव खाली होते गए, केवल 24 गाँव रह गए। उनमें से भी 6 गाँव और कम हुए। कछपुरा निवासी बंधु ने अपनी पुस्तक में 18 गाँव का उल्लेख किया है। धीरे-धीरे और गाँव खाली हो गए, जिनके नाम इस प्रकार है। हथकान्त, पारना, रीछापुरा, कमतरी, कछपुरा, मई एवं बिजकौली।

हमारे इन गाँव में पक्की सुंदर हवेलियाँ बनी थी। जो हमारे पूर्वजों के शौर्य और वैभव की प्रतीक थी। इनमें हथकान्त, पारना, कमतरी, बटेश्वर, होलीपुरा, पुरा, तालगांव, बिजकौली तथा पिनाहट, तरसोखर इन सभी गाँव में पक्की हवेलियाँ है, जो एक से एक सुंदर तथा कला युक्त हैं। उनमें भी पिनाहट, बटेश्वर एवं कमतरी जिनकी हवेलियाँ ऊँचे टीले पर बनी थी जो कि उस समय एक दुष्कर कार्य था। यह एक विचारणीय प्रश्न है कि इतने ऊँचे स्थानों पर तीन–तीन मंजिला हवेलियाँ साधनों के अभाव में जो कि उस समय नहीं थे। उनका निर्माण कैसे हुआ होगा?

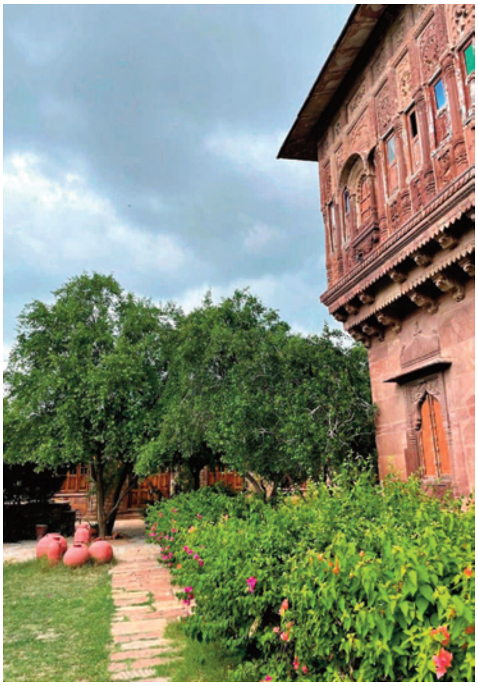

भदावर के हमारे गाँव में सबसे पहले हथकांत उसके बाद चंद्रपुर तथा उसके बाद तरसोखर उसके बाद शेष गाँव आबाद होते चले गए। उसके बाद आर्थिक संसाधनों के कारण लोगों ने अपने गाँव छोड़ें और शहरों की आबादी बढ़ती गई, लेकिन आजकल शहरों में बढ़ता हुआ प्रदूषण (जैसे दिल्ली) का उदाहरण हमारे सामने है। जहाँ दिल्ली में इतना ज्यादा प्रदूषण है, कि लोगों को सांस लेना भी दुर्लभ। अब लोगों को अपने गाँव की याद आ रही है। वहाँ के शुद्ध प्रदूषण रहित वातावरण की। इसी कारण हमारे कुछ बंधु अपने पूर्वजों के धरोहर हमारी हवेलियाँ तथा हमारे घर थे। उनको सुरक्षित रखने के लिए उनमें मरम्मत करवा कर उन्हें सुरक्षित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए पिनाहट में दो हवेलियां का पुनर्निर्माण, कमतरी में दो हवेलियों का चल रहा है। पुरा में दो हवेलियाँ तथा शेष लोगों ने अपने घरों की मरम्मत कराकर सुधारे। होलीपुरा में लोग अपनी धरोहर को संजो रहे हैं। यही आग्रह शेष बंधुओ से है अपने बुजुर्गों की थाती सुरक्षित कर उसे संजो कर रखें। गांव में अब जीविका के संसाधन उपलब्ध होने लगे हैं। सरकार गाँव में तेजी से विकास कर रही हैं। विकास कार्य हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में ऋण भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं, ताकि नौजवानों को व्यवसाय करने के लिए धन उपलब्ध हो जाए। सड़कों का निर्माण हो रहा है। कमतरी में तहसील का कार्यालय खुल गया, हॉस्टल खुल गए आदिवासी बच्चों के, होलीपुरा एवं बटेश्वर हेरिटेज गांव घोषित हो जाने के बाद पिक्चर की शूटिंग होने लगी। गांव जाने के लिए नवयुवकों का क्रेज बढ़ गया। तालगांव में दूध की डेरी खुल गई। होलीपुरा में गेस्ट हाउस तथा पुरा कन्हैरा में शादी हाउस का निर्माण भी हो गया है। यह विकास के शुरुआत है आगे भी तेजी से विकास होगा।

कई गाँवों में साल में एक बार कोई बड़ा कार्यक्रम होता है। चंद्रपुर, कमतरी कछपुरा में चैत्र की अष्टमी का कार्यक्रम। पुरा, होलीपुरा, तालगांव में होली का कार्यक्रम संपन्न होता है तथा आपस में मिलन होता है। जिससे भाईचारा बना रहे। तथा चतुर्वेदियों की समृद्ध परंपरा जीवित रहे जो अन्य वर्ग के लोगों के लिए उदाहरण है।

होलीपुरा

- डॉ. विनीता चौबे, भोपाल

होलीपुरा-होलीपुरा
तुम कहलाते हो तखतगांव ऐ मेरे होलीपुरा
तुम जन्मभूमि हो मेरी
मैंने सिर्फ जन्म लिया था वहां
घर है मेरे पुरखों का वहां
कुछ कच्चा-कुछ पक्का सा
लग के रही नहीं कभी मैं उस घर में
पर हां उस घर के आँगन में
बिताई हैं कई बार मैंने गर्मी की छुट्टियाँ
और एक-दो बार की होली और दीवाली
खेले हैं कई खेल ऊपर-नीचे-छत-चौबारे
चलाई है सब बच्चों के साथ
सीटी मारती लंबी रेलगाड़ी
माँ बताती थी कि
घूमी हूँ अपने बाबा की गोद में
या कि उंगली पकड़े उनकी-उनको ही
घुमालाती थी पूरे गांव में
बाबा ने मेरे जनम पर खरीदी थी एक
गाय
सिर्फ मेरे लिए....
और पिया था गरम-गरम दूध दुहती
हुई गाय का
चुराया है साबत तेल के आम का
अचार
अपनी दादी से छुप के
और खाया है कुरकुरी बासी पूड़ियों के साथ
कलेवा किया है दही पेड़े का और बतासों का
कभी-कभी घूमा है बटेश्वर का मेला
बच्चों की टोली के साथ
और डुबकी लगाई है वहाँ की जमुना में
और हाँ,
सुने हैं भूत और चुड़ैलों के अनेकों किस्से
गांव की शादी-ब्याह में छत पर लेटे डरते-डराते
पर मुझे बताइये-
क्या इतनी सी स्मृतियां
काफी होती हैं जीवन भर यादों में बने रहने के लिए
अब तो मैं हो चली हूँ साठ-पैंसठ की

देख ली मैंने भी बहुत दुनिया और दुनियादारी
पर ऐ होलीपुरा! तुम हो कि मेरा पीछा ही नहीं छोड़ते
मैं देखूं कोई भी नदी
मुझे याद आती है गांव की जमुना नदी
मैं झूलूं कोई भी झूला
मुझे याद आता है चबूतरे के नीम पर डाला झूला
जिसे भाई ने लंबी रस्सी से डाला था
और मैं झूली थी लंबी-लंबी पेंग बढ़ा के
सामने लगी निबौलियों को पैर से छूने की कोशिश में
मैं जाती हूँ देश-विदेश घूमने
देखती हूँ पुरानी कैसल और अचानक
अपने गांव की विशाल हवेलियां
आ खड़ी होती हैं मेरे सामने
इधर शहरों में ब्याह शादी में
सजी-धजी स्टालों में रखने पकवानों
का चखती हूँ स्वाद,
तो आ जाती है मेरे सामने वो ज्योनारें
एवं पंगतें
दोना—पत्तल में परोसे गए स्वादिष्ट-
खुशबूदार व्यंजन
जिनका स्वाद-संपूर्ण दृश्यावली के
साथ
उपस्थित हो जाता है मेरे सामने
इतना ही नहीं छत पर से गीत-गारी गाती
हुई
महिलाओं के गीतों की ध्वनियां
कान में कुछ गुनगुना जाती हैं
न मैं रही वहाँ, न मैं पली वहाँ
न मैं पढ़ी वहाँ, न मैं बढ़ी वहाँ
और न ही मेरी शादी हुई वहाँ
बस सिर्फ जन्मभूमि है तू मेरी
तेरी माटी में सिर्फ जन्मी थी मैं
फिर तुम मुझे फिर-फिर बार-बार
क्यों याद आते हो
ए मेरे तखतगांव होलीपुरा।।

फूल (अस्थियों) का गंगा आदि पवित्र नदियों में विसर्जन क्यो?

कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज (उत्तरप्रदेश)

"यावदस्वीनि गंगायां तिष्ठन्ति पुरूषस्य तु।
तावद वर्ष सहस्त्राणि स्वर्गलोके महीयते।।"

मृतक की अस्थियों को धार्मिक दृष्टिकोण से फूल कहते हैं। इनमें अगाध श्रद्धा और आदर प्रकट करने का भाव निहित होता है। जहां संतान फल है,वही पूर्वजों की अस्थियां फूल कहलाती हैं। कर्म पुराण के मतानुसार इन्हें गंगा जैसी पवित्र नदी में विसर्जित करने से जितने वर्ष तक अस्थियां(फूल) गंगा में रहती हैं। उतने वर्षो तक वह स्वर्ग लोक में पूजित होता है।

"तीर्थानां परमं तीर्थ नदीनां परमा नदी।
मोक्षदा सर्वभूतानां महापातकी नामपि।।"

गंगा को सभी तीर्थ में परम तीर्थ और नदियों में श्रेष्ठ नदी माना गया है।वह सभी प्राणियों , यहां तक की महापातकियो को भी मोक्ष प्रदान करने वाली है। गंगा जी के पावन जल से ही राजा सगर के 60,000 श्रापग्रस्त पुत्रों का उद्धार हुआ।

शास्त्रों के कथन अनुसार

"सर्वत्र सुलभा गंगा त्रिषु स्थानेषु दुर्लभा।
गंगाद्धारे प्रयागे च गंगासागर संगमे।।"

गंगा सर्वसाधारण के लिए सर्वत्र सुलभ होने पर भी हरिद्वार,प्रयाग एवं गंगासागर इन तीनों स्थानों में दुर्लभ होती है। उत्तम गति की इच्छा करने वाले सभी प्राणियों के लिए गंगा के समान और कोई दूसरी गति नहीं है।

मृतक की अस्थियों को गंगा में विसर्जन करने की प्रथा के पीछे वैज्ञानिक तथ्य छुपा है। क्योंकि गंगा नदी में सैकड़ो वर्ग मील भूमि को सींच कर उपजाऊ बनाया जाता है। जिससे उसके निरंतर प्रभाव के कारण भी उपजाऊ शक्ति घटती रहती है। ऐसे में गंगा में फास्फोरस उपलब्धता बनी रहे। इसलिए उसमें अस्थि विसर्जन करने की परंपरा बनाई गई है। ताकि फास्फोरस से युक्त खाद्य पानी द्वारा अधिक पैदावार उत्पन्न की जा सके। उल्लेखनीय है कि फास्फोरस भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए एक आवश्यक तत्व है। धार्मिक मान्यता है कि तब तक मृतात्मा की परलोक यात्रा प्रारंभ नहीं होती,जब तक उसके फुल गंगा में विसर्जित नहीं कर दिए जाते।

।। हर-हर गंगे।।

कंस मेला

मथुरा में चतुर्वेदी समाज की लोग कंस के पुतले को पीटते हैं। उत्तर प्रदेश के मथुरा में दशमी के दिन कंस का मेला आयोजित किया जाता है। इसमें चतुर्वेदी समुदाय के लोग कंस के पुतले को लाठियों से पीटते हैं। कहा जाता है कि द्वापर युग में श्रीकृष्ण ने कंस का संहार किया था। कलयुग में यह परंपरा चतुर्वेदी समाज के लोग निभाते हैं। कार्तिक शुक्ल पक्ष की दशमी पर कंस वध मेला सदियों से लगता आ रहा है।

चतुर्वेदी समाज का विश्व प्रसिद्ध कंस का मेला जो कि अक्षय नवमी के अगले दिन चतुर्वेदी समाज द्वारा मनाया जाता है एवं देखने के लिए दूर-दूर से दर्शक आते हैं।

कंस मेला ब्रज में आयोजित होने वाले प्रसिद्ध मेलों में से एक है। कंस टीले पर आयोजित होने वाला यह मेला ब्रज का विशेष आकर्षण है। भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कंस को मारने के उपलक्ष्य में मथुरा में यह मेला आयोजित होता है। इस दिन चतुर्वेदी युवक अपनी-अपनी लाठियों से सुसज्जित होकर कंस टीले तक जाते हैं। वहाँ कंस के पुतले को नष्ट करके उसके मस्तक को लाकर कंसखार पर नष्ट करते हैं, तदुपरांत विश्राम घाट पर प्रभु को विश्राम देकर पूजन आरती का कार्य सम्पादन करके, कंस वध के दिन की स्मृति को परम्परागत रूप से साकार करते हैं। इस मेले में चतुर्वेदी समाज के नेतृत्व में सम्पूर्ण मथुरावासी भी उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

श्री कमलेश चन्द्र पाण्डेय
पूर्व सभापति व संरक्षक

- भरत चतुर्वेदी (होलीपुरा/रिषड़ा)

मैनपुरी निवासी एवं नोएडा प्रवासी श्री कमलेश चन्द्र जी का जन्म 15 नवम्बर 1953 को स्व0 जगदीश प्रसाद जी के पुत्र रूप में मैनपुरी में हुआ। आपने प्रारम्भिक शिक्षा मैनपुरी में पूर्ण कर स्नातक एवं एल0 एल0 बी0 की डिग्री कानपुर विश्व विद्यालय से हासिल की। प्रारम्भ में आजीविका के लिए आपने मैनपुरी को ही वकालत के लिए चुना, बाद में जब आप सरकारी वकील बने तो दिल्ली चले आये जहां आगे चलकर सन 1985 को आप केन्द्र सरकार के भविष्य निधि संगठन में सहायक आयुक्त के पद पर नियुक्त हुए और अति.केन्द्रीय आयुक्त के पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में आप विधि सलाहकार के रूप में नोएडा में सेवारत हैं। सामाजिक क्षेत्र में आपकी पारिवारिक पृष्ठभूमि ख्यातिप्राप्त रही है आप स्व0 कालका प्रसाद जी महासभा के पूर्व सभापति के दोहित्र एवं स्व0 उमराव सिंह जी पांडे परिवार के होने के साथ साथ सामाजिक केंद्र मैनपुरी आपकी जन्मभूमि है।

महासभा के 33 वें सभापति के रूप में आपने सन 2017 से 2020 तक सभापति पद को सुशोभित ही नहीं किया बल्कि कई उल्लेखनीय कार्य समाज हित में किए हैं। सर्वप्रथम लगभग एक शताब्दी बाद मैनपुरी में अधिवेशन का आयोजन होना आपकी सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। आपके विचार स्पष्ट एवं दूरदर्शी रहे है। उदाहरण के लिए अपने अध्यक्षीय भाषण में आपने कहा कि सहयोग लो, सहयोग दो और आगे बढ़ो।आज के युग में अब डिजिटल माध्यम से ही एक दूसरे के सम्पर्क में आ रहे हैं और आगे भी केवल यही माध्यम प्रचलन में रहने वाला है। अतः यह आवश्यक है कि हम सभी वेबसाइट के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े।आज के सामाजिक परिवेश पर अपने वक्तव्य में आपने आगे कहा कि– देखा जाता है कि कुछ ना करने वाले लोग अनावश्यक व आधारहीन आरोप लगाकर सामाजिक कार्य में व्यवधान डालते हैं और सहयोग करने वालों को नकार कर कहते रहते हैं कि उन्होंने ऐसा क्या किया या कुछ नहीं किया आदि आदि। ऐसे लोगों के लिए मैं क्या कहूं समझ में नहीं आता लेकिन संत तुलसीदास जी का गए हैं कि–

ठाडे द्वार न दे सके, तुलसी जो नर नीच।निन्दहि बलि हरचन्द को, कह किय करन दधीच।आपने चतुर्वेदी चंद्रिका का अंक पीडीएफ ऑनलाइन उपलब्ध कराने का महत्वपूर्ण कार्य किया। आपके ही कार्यकाल में नोएडा ,चंडीगढ़ एवं पुणे जैसे स्थानों पर प्रथम बार महासभा की बैठकों का भी आयोजन हुआ। वर्तमान में आप महासभा के संरक्षक हैं।समय समय पर महासभा को आपका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है। गत नवम्बर माह की पन्द्रह तारीख को जन्मदिन के साथ आप जीवन के सत्तर वर्ष पूर्ण कर चुके हैं ।आशा है आप समाजोत्थान हेतु इसी भांति निरन्तर लगे रहें आपके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घजीवी होने की हम सभी कामना करते हैं।

एक अद्भुत व्यक्तित्व के धनी कर्नल आलोक

- ले.ज.विष्णु कान्त, गुरुग्राम

कर्नल आलोक से वैसे तो मेरा फौजी रिश्ता था, जो बहुत आत्मीय था। धीरे-धीरे यह एक घनिष्ठ रिश्ता बन गया l वह मुझे मेरे छोटे भाई की तरह प्रिय था l मेरे विवाह के बाद एक और रिश्ता जुड़ गया थाl अलोक के पिताजी और मेरे पिताजी दोनों ही उत्तर पूर्व रेलवे में वरिष्ठ अधिकारी थे, और बहुत घनिष्ठ मित्र भी थेl

मुझे याद है कि इज्जत नगर (बरेली के पास) में दोनों एक साथ पदासीन थे। तब से मैं आलोक को बहुत अच्छी तरह से जानता था l आलोक को 1982 में इंडियन मिलिट्री एकेडमी देहरादून से कमीशन मिला। उसने भारत की सभी कठिन सीमाओं पर अपनी सेवाएं दीं। विश्व की सबसे ऊंची चोटी सियाचिन में भी कर्नल आलोक तैनात रहे। फिर सैनिक जीवन में भी हम लोग कई स्टेशनों पर साथ रहे l इससे हमारी घनिष्ठता बढ़ती ही गई l एक बहुत ही सरल हृदय का व्यक्ति, सभी का आदर-सत्कार करने वाला, आलोक सेवा और सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहता था। वह मेरे बच्चों का बहुत ही प्रिय मामाजी था l हर विशेष पर्व पर, त्योहारों पर, अत्यंत व्यस्तता और समय की कमी के बावजूद भी उसका नियमित रूप से लोरेन जी के साथ घर आना, और दादी मां, हम दोनों के पैर छूकर आशीर्वाद लेना,सदैव याद रहेगा l राखी और भैया दूज पर सभी बहनों की राखी और टीके लेकर घर आना और सारी बहनों की राखी, मेरी जीवनसंगिनी से बंधवा कर और उनसे टीका लगवाना, उसकी यह भोली आदत सदा याद रहेगी l परिवार में जब भी किसी को किसी भी प्रकार की जरूरत होती थी, और अगर प्रिय आलोक को उसका आभास मिल जाये तो बिना हिचक और विचार किये उसे पूर्ण रूप से पूरा करना उसकी आदत बन गई थी l यहां तक की अनेक अवसरों पर, उसने अपने प्रियजनों की मदद की, लेकिन किसी को इस करनी का भान तक न हुआ। यह उसका एक बहुत ही खूबसूरत चरित्र था।

एक अच्छे पुत्र के रूप में उसने श्रवण कुमार की तरह प्रिय आलोक ने अपने आदरणीय माता पिता की सेवा की और सदैव आदर और सम्मान दिया। अगर उन्होंने कभी कोई इच्छा जाहिर की, तो वह आलोक के लिए पत्थर की लकीर हो जाती थी। सैनिक जीवन में भी उसका व्यवहार और आचरण बहुत उत्तम दर्जे का रहा।उसकी 170 फील्ड रेजीमेंट के जवान, जेसीओ, और अधिकारी गण सभी उसका आदर और सम्मान करते थे। जिसके साथ भी उसने नौकरी की, वह आज भी उन्हें प्रेम, आदर और सम्मान के साथ याद करते हैं l एक साहसी, निष्कपट, ईमानदार, निष्ठावान सिपाही के तौर पर वह सदैव जाना जायेगें l सेना से सेवानिवृत्त होंने के बाद भी आलोक ने आराम नहीं किया और अपने आप को सक्रिय रखा l उसने एमिटी विश्वविद्यालय में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर काम किया। यहां पर भी एक पूर्ण रूप से नए वातावरण में भी वे बहुत जल्दी घुल मिल गये l मै जब कभी भी उसके वरिष्ठ अधिकारियों से मिला तो, मुझे आलोक की प्रशंसा सुनकर बहुत ही खुशी मिलती थी। वह आलोक कि प्रशंसा करते कभी भी थकते नहीं थे। उसके अधीन कर्मचारी भी आलोक को पिता सम्मान और भगवान स्वरूप आदर और सम्मान देते थे।

मानवीय और नैतिकता के मूल्यों पर आलोक सदैव सबसे ऊंचे पायदान पर रहे उनकी दया की भावना,कृपा और सहानुभूति के उच्च विचार हम सबको को सदा प्रेरित करते रहेंगे। आलोक ने अपनी जीवन संगिनी लोरेन और पुत्र अंगद का भी खूब ख्याल रखा। उनकी सारी इच्छाएं खूब पूरी की। भाई बहन और सभी परिवार के सदस्यों के प्रति समस्त जिम्मेदारी पूरी की और सबका ख्याल रखाl हम सब के लिए और विशेष तौर पर मेरे लिए, मेरा अनुज प्रिय आलोक कभी भी हमारी यादों से नहीं निकल पाएगा l

हम तुम्हें कभी भूला न पाएंगे। तुम अमर हो।आज 6 दिसम्बर को प्रथम पुण्यतिथि पर हम सबकी भावभीनी श्रद्धांजलि और शत शत नमन अलविदा मेरे भाई, हम तुम्हें कभी न भूल पायेंगे।

प्रथम पुण्य तिथि

"आए हैं ,रहना भी है ,खोना भी है ,पाना भी है ,
ज़िन्दगी की इस कहानी से निकल जाना भी है ।
कौन कैसे जा चुका है, ये अहम मुद्दा नहीं ,
कौन कैसे है हृदय में, ये नज़र आना भी है ।।""
-----------------^^----------------

स्व0 गिरधारी लाल चतुर्वेदी
(सुपुत्र स्व0 राम गोपाल जी चतुर्वेदी एवं स्व0 अशर्फी देवी)
(निवासी-तालगाँव/प्रवासी-लखनऊ)
जन्म : 04 अप्रैल 1939
ईश्वरीय लोक प्रस्थान : 06 नवंबर 2022 (मास- कार्तिक- तिथि बैकुंठ चतुर्दशी)

इस वसुंधरा पर आने-जाने के शाश्वत और ईश्वरीय विधान के अनुक्रम में गत वर्ष कार्तिक मास, तिथि-बैकुंठ चतुर्दशी दिनांक 6 नवंबर-2022 को पूज्य पिता जी के ईश्वरीय लोक को प्रस्थान के एक वर्ष पर दिव्य आत्मा को पुनः नमन करते है तथा प्रस्थानित आत्मा को इस मृत्युलोक के आवागमन से मुक्त करने अर्थात पुण्य मोक्ष की प्रार्थना करते है।

विनम्र श्रद्धांजलि

पत्नी	:	श्रीमती सुधा चतुर्वेदी
पुत्र एवं पुत्र वधु	:	श्री यदुवेश चतुर्वेदी- श्रीमती चेतना चतुर्वेदी
पौत्री एवं पौत्र		प्रेक्षा, यशवी एवं सस्मित
		तथा समस्त परिवार

561/1, सिन्धु नगर,
"कोतवाली" कृष्णा नगर के पास,
लखनऊ-226023
8318766201, 9450000532

(र.क्र.-2058)

शाखा समाचार

भोपाल

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी भोपाल में चतुर्वेदी समाज की पिकनिक एवं होली मिलन के आयोजन हेतु कार्यकारिणी की वार्षिक बैठक इस बार श्री विकास चतुर्वेदी (मौली) के यहाँ हुई। बैठक में चर्चा कर सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि इस वर्ष पिकनिक का आयोजन 24 दिसंबर 2023, रविवार को एवं होली मिलन का आयोजन 31 मार्च 2024, रविवार को हर्षोल्लास से किया जाएगा। (स्थान व समय सहित विस्तृत जानकारी शीघ्र व्हाट्सएप पर साझा की जाएगी)। बैठक में अन्य विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा हुई।

एक और महत्त्वपूर्ण विषय पर चर्चा के दौरान श्रीमती उषा चतुर्वेदी को महासभा के सभापति पद के प्रत्याशी के लिए भोपाल शाखा सभा के द्वारा उनका नाम प्रस्तावित किया गया।

लगभग 100 वर्ष के इतिहास में यह प्रथम अवसर है कि समाज की एक महिला महासभा की सभापति बनेगी, इसलिए सभी भोपाल वासियों से अनुरोध है कि अपना अमूल्य वोट देकर सहयोग प्रदान करें। अवगत करना चाहेंगे, जैसा कि पिछले वर्ष पिकनिक एवं होली मिलन के आयोजन में भारी जन समुदाय ने उत्साह पूर्वक शामिल होकर दोनों कार्यक्रमों को सफल बनाया। वैसे इस बार भी भोपाल चतुर्वेदी समाज के समस्त बांधवों से दोनों आयोजनों में सपरिवार शामिल होकर उल्लास एवं उत्साह के साथ सफल बनाने का अनुरोध, श्री माथुर चतुर्वेदी भोपाल शाखा सभा की सम्पूर्ण कार्यकारिणी की तरफ से है। वार्षिक बैठक में मौजुद श्री अनिल जी, दीपक जी, प्रेम जी, श्रीमती सीमा जी, गजेंद्र पांडे जी, अंबर पांडे जी, शशांक जी (संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका), हरीश जी, नीरव जी, श्रीमती गार्गी जी, श्रीमती सपना जी, अर्जुन जी, राहुल जी, भरत जी (संरक्षक, महासभा), सुमंत जी (अध्यक्ष) एवं विशेष रूप से आमंत्रित श्रीमती उषा जी एवं अन्य गणमान्य सदस्यों की उपस्थिति थी। स्वादिष्ट स्वल्पाहार की व्यवस्था के लिए विकास जी और परिवार के सदस्यों का आभार व्यक्त कर बैठक संपन्न हुई ।

– हरीश चतुर्वेदी,सचिव

***

मुंबई

दिवाली मिलन – 2024 –
श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय, मुंबई

दिनांक 5/11/23 की शाम को श्री माथुर चतुर्वेदी समुदाय मुम्बई द्वारा भव्य दीपावली मिलन समारोह का अयोजन, पवई स्थित समुदाय के अध्यक्ष श्री विवेक चतुर्वेदी जी की L&T की गगन चुम्बी भव्य इमारत की छत पर हुआ। जिसमें समाज के सैकड़ों बन्धुओं, पदाधिकारी गणों, कार्यकारिणी के सदस्योंऔर समाज गणमान्य लोगों ने भाग लिया।

सर्व प्रथम मेधावी छात्र छात्राओं का अभिनंदन किया गया। उसके पश्चात इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि के रुप में सांसद श्रीमती प्रियंका चतुर्वेदी जी का समाज की प्रथम महिला सांसद होने के नाते भव्य सम्मान किया गया। तत्पश्चात, मुम्बई समुदाय के एक पुरातन प्रतिष्ठित परिवार स्व. श्री रविन्द्र नाथ जी के पुत्र C.A श्री अनिल चतुर्वेदी जी, आयकर ट्रिव्यूनल दिल्ली के सदस्य का सम्मान किया गया।

इसके बाद पूर्व अध्यक्ष, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा एवं मुम्बई समुदाय श्री राजेन्द्र चतुर्वेदी जी, एवं उद्योगपति श्री सुरेश चतुर्वेदी जी का सम्मान और स्वागत हुआ। तत्पश्चात भजन सम्राट श्री अनूप जलोटा जी ने भजनों व अन्य गीतों का मधुर प्रस्तुतीकरण किया। अन्त में समधुर और स्वादिष्ट भोजन का आयोजन किया गया और सभी बांधवो ने आपस में दीपावली की शुभकामनाये प्रगट कर पालागन की गूंज के साथ आयोजन का विसर्जन किया।

***

कोटा

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कोटा ने 77वां स्वाधीनता दिवस बड़ी धूमधाम से हर्षोल्लास के साथ चतुर्वेदी सभा भवन के प्रांगण में मनाया। 9.30 बजे से ही बांधव और बहनों का आना शुरु हो गया था। ठीक 10 बजे मुख्य अतिथि हमारे संरक्षक डॉ. कमलकिशोर चतुर्वेदी की गरिमामयी उपस्थिति में सभा के अध्यक्ष श्री विनय चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। राष्ट्र गान के पश्चात श्री विनय चतुर्वेदी ने अपने सम्बोधन में कहा कि पूरा देश आज स्वतन्त्रता का अमृतमहोत्सव मना रहा है और हमारा

चतुर्वेदी समाज भी इसमें अपना योगदान दे रहा है। उन्होंने आगे कहा कि हमारे समाज के इस वटवृक्ष की जड़ें सम्पूर्ण देश में फैल गयी है और वह देश के विकास में अपनी भागीदारी निभाते हुए मजबूती से खड़ा है। चतुर्वेदी समाज पूरी तरह एक है और एक परिवार के हैसियत से ही हम यह समारोह मनाने यहाँ एकत्रित हुये हैं। मुझे अध्यक्ष के रूप में जो समाज सेवा की जिम्मेदारी दी गई है इसमें मेरी पूरी कोशिश रहेगी कि इसी तरह हमारी एकता अखंड रख सकूँ। सब एक दूसरे से जुड़े रहें। सुख दुख में काम आवें, पद तो आते जाते रहेंगे लेकिन सेवा भाव सदैव हमारे दिल में रहना चाहिये। इस अवसर पर महानुभाओं , गणमान्यों को याद करते हुए कहा कि हमारे पूर्ववर्ती सर्वश्री रूपकिशोरजी, उपेन्द्रजी, रमाकांतजी, टिकिटनारायणजी, विनोदजी, श्रीनंदनजी, विजयजी, कमलेशजी, ललितजी आदि के प्रयासों से कोटा समाज आज पूरे देश में अपनी छाप छोड़े हुए है। उन्होंने समाज बान्धवों को इनके पदचिन्हों पर चलने का विश्वास दिलाया।

संचालन अपनी ओजस्वी वाणी में श्री शशि चतुर्वेदी ने किया। इस बार महिलाओं की संख्या भी अच्छी खासी रही। अनुप्रिया, अपेक्षा, मन्थन के देश भक्ति गीतों से वातावरण उत्साह से भर गया। राखी, अरुणा, अर्चना, अनुपमा, बिन्दु, विजयलक्ष्मी आदि के साथ महिलाओं के द्वारा कई गीत गाये गये। शशि चतुर्वेदी की वीर रस की कविताओं से माहौल जोशीला हो गया। गरमा गरम स्वल्पाहार चल ही रहा था कि तेज बारीश ने मौसम बेहद सुहाना बना दिया। स्वल्पाहार के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ।

— शिव चतुर्वेदी, कोषाध्यक्ष

***

आगरा

दिनाँक 18/11/2023 को समाज का दीपावली मिलन व अन्नकूट उत्सव आगरा यूनिवर्सिटी कैम्पस में आयोजित किया गया। इस अवसर पर समाज के बांधवों के साथ साथ समस्त गणमान्य व बाहर से आये हुए अतिथि भी उपस्थित थे। आयोजन को बहुत जोर शोर से उत्सव के रूप में मनाया व रामजन्म व रामलीला के पात्रों के रूप में छोटे छोटे बच्चों ने सज धज कर रामचरित के समस्त पात्रों को निभाया।

समाज की परम्पराओं के विषय व रामचरित मानस से संबंधित प्रश्नावली का आयोजन किया गया। साथ ही कोषाध्यक्ष ने आय

व्यय का व्योरा समाज जनों के समक्ष प्रस्तुत किया महामंत्री राकेश जी ने इस साल में की गयी गतिविधियों और आने वाले आयोजनों के लिए अपनी रुप रेखा पर प्रकाश डाला। साथ ही विजन व मिशन के विषय में अवगत करवाया। मंच संचालन निधि चतुर्वेदी द्वारा किया गया। जिसमें बच्चों द्वारा डांस किया गया व महिला एवम पुरुषों द्वारा अंताक्षरी व तंबोला में सभी उम्र के समाज जन ने मिलकर भागीदारी दर्ज की। इसी क्रम में आयुष्कांत एवम रूपम चतुर्वेदी जी की वैवाहिक वर्षगाँठ को सभा द्वारा मनाया गया। अमित पाण्डेय ने बताया कि इस अवसर पर डॉ प्रवीन जी, अजीत पाण्डेय जी, महेंद्र नाथ जी, दिनेश मिश्रा जी, जुगल किशोर जी, अनिल जी, आयूष कान्त जी, प्रफुल्ल जी, श्रिशी जी, भूदेव जी, संजीव जी,ब्रमेश जी, चंद्रादित्य जी गौरव जी, उमा जी, रेखा जी मुंबई से पधारी थी,सुनीता जी पदम जी एवम समस्त युवा मंच के साथियों ने बढ़ चढ़ के उपस्थिति दर्ज करवाई।

श्री मुकेश जी व महिला प्रकोष्ठ शेफाली जी ने अध्यक्षीय भाषण व राजीव जी ने धन्यवाद आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समस्त कार्यकारणी सदस्यों श्री मुकेश चतुर्वेदी जी, राकेश पाठक जी, रोहित चतुर्वेदी, राजीव जी, श्री कपिल, अमित जी, आशीष जी,अनिल जी, मनोज जी,आशीष जी (रानू), पराग जी, आशुतोष जी,मनीष जी (रामबाग), दीपक जी, मनीष जी, नितिन जी, पुष्कर जी, हर्ष जी, राहुल जी,केशव जी व महिला प्रकोष्ठ की निधि जी, शेफाली जी, अंजली जी, डा.रेनू जी, पल्लवी जी, अरुणा जी, हिमाना पाण्डेय जी,निहारिका जी, अंजली जी, चारु जी, बबिता जी ने कार्यक्रम का सफल करने हेतु भागेदारी निभाई।

– **मुकेश चतुर्वेदी,** अध्यक्ष

समाज समाचार

- श्री विवेक चतुर्वेदी (अध्यक्ष, मुंबई समुदाय) - श्रीमती शेफाली चतुर्वेदी ने बेटी डॉ. श्रुति चतुर्वेदी (एमएस जनरल सर्जरी) किंग्स एडवर्ड मेडिकल हॉस्पिटल, मुंबई सुपर स्पेशलिटी कोर्स इन प्लास्टिक सर्जरी के लिए एन.ई.ई.टी, एस.एस. एग्जाम 2023 द्वारा चयन होने के अवसर पर 42000/- रुपये अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए। बहुत बहुत बधाई। (र.क्र.-2068)

- सुश्री भवि चतुर्वेदी पुत्री श्री विवेक चतुर्वेदी कोटा ने एन आई टी, भोपाल से मेटलॉजिकल इंजीनियरिंग 2023 में 9.19 सी.जी.पी.ए के साथ रजत पदक प्राप्त किया। बहुत बहुत बधाई।

- श्री सुमंत चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा/मुंबई) द्वारा अपने पिता स्व. नरेश चंद्र चतुर्वेदी एवं माता श्रीमती हीरा चतुर्वेदी की स्मृति में 5001/- रुपए अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किये। (र.क्र.2067)

- स्व. बाबू श्री ओमकार नाथ चतुर्वेदी (होलीपुरा/कानपुर) की स्मृति में, स्व. श्री प्रभात कुमार चतुर्वेदी (इटावा) की स्मृति में एवं स्व. श्री सतीश चतुर्वेदी (इटावा) की स्मृति में श्री विकास चतुर्वेदी, चुन्ना भैया (कानपुर) द्वारा (प्रत्येक की स्मृति में 12000/- रुपये केवल) अन्नपूर्णा योजनार्थ 36000/- प्रदान किये। (र.क्र.2066)

- स्वर्गीय श्री दयाशंकर चतुर्वेदी (कानपुर/होलीपुरा) की पुण्य तिथि (17/10/23) पर उनके पुत्रों राजीव एवं संजीव एवं समस्त कक्का परिवार द्वारा अन्नपूर्णा सहयोगार्थ रु. 24,000/- प्रदान किए ! (र.क्र.-2030)

- स्व. श्री जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी (कछपुरा/भोपाल) की प्रथम पुण्यतिथि (09/11/23) के अवसर पर श्रीमती शारदा चतुर्वेदी ने अन्नपूर्णा सहायतार्थ 5000/- प्रदान किये। (र.क्र.2059)

- श्री अविरल एवं श्रीमती दीप्ति चतुर्वेदी सुपुत्र श्री संजय चतुर्वेदी 'कुक्कू' (हिन्डौन/जयपुर) को दिनाँक 22/11/23 पुत्री-रत्न की जयपुर में प्राप्ति हुई है। हार्दिक बधाईयां

- अपने बड़े भाइयों स्व. दयानंद जी एवम स्व. हेमचंद जी (पुरा/भोपाल) की स्मृति में डॉ. दिवाकर नाथ चतुर्वेदी (भोपाल) द्वारा 12,000/- रुपये अन्नपूर्णा सहायतार्थ प्रदान किए। (र.क्र.-2055)

दीप जलते ....

- शैलेन्द्र चतुर्वेदी,फिरोजाबाद

अमावस की घनी काली रातें
जगमग जगमग दीप जलते।
अंधेरे को टिकने नहीं देते,
हजारों दीप जगमगा जाते।
अंधेरा दूर कोने में सिमटते,
आसमान में टंगे सितारे छुपते।
दीवाली उल्लास, उमंग,
जीवन में भर जाते,

ज्योति प्रज्वलित कर
अंधेरा टिकने नहीं देते।
पंरपरागत पूजन कराने
पंडित जी घर घर आते ,
पंचतत्व गुणों युक्त
मिट्टी दीप जल उठते।
शगुन की फुलझड़ी जलाते,
दीवाली को धुंए,

धमाके,शोर से बचाते।
परिवार, मित्रों संग मस्ती करते,
तेल का दीप जला
हर ओर रोशनी फैलाते ।
आंनद से अभिभूत सभी हो जाते,
मां लक्ष्मी गणेश से हम प्रार्थना करते।
दीपावली पर्व को सुखद बनाते
जगमग जगमग ज्योति जलाते।

बिछड़े स्वजन

* श्री नरेश चंद्र जी (इटावा/दिल्ली) का देहावसान दिनाँक 04 नवंबर 2023 को दिल्ली में हो गया। आप पूर्व में दिल्ली सभा के अध्यक्ष रहे है।

* श्री कमलकांत जी चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री लक्ष्मी नारायण जी चतुर्वेदी (भीलवाड़ा) का देहावसान दिनाँक 04 नवंबर 2023 को हो गया।

* श्रीमती सुधा चतुर्वेदी पत्नी स्व. कौशलाधीश चतुर्वेदी (चंद्रपुर/ग्वालियर) का स्वर्गवास दिनाँक 06/11/23 लखनऊ में हो गया।

* श्री प्रेम नाथ चतुर्वेदी बुल्ला जी पुत्र स्व. श्री केदारनाथ चतुर्वेदी (मथुरा) का स्वर्गवास दिनाँक 06/11/23 को आगरा में हो गया।

* श्रीमती सरिता चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री महेशचंद्र चतुर्वेदी (बजाजखाना, कोटा) का स्वर्गवास दिनांक 6 नवंबर 2023 को हो गया।

* श्री शिव प्रसाद चतुर्वेदी नवल सुपुत्र स्व. श्री विश्वेशर प्रसाद चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 15 सितंबर 2023 को जयपुर में हो गया।

* श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी, रिटायर्ड डीएफओ उम्र 101 वर्ष का स्वर्गवास दिनाँक 18 नवंबर 2023 को भोपाल में हो गया।

* श्री हर्ष चतुर्वेदी पुत्र श्री युगल कुमार चतुर्वेदी (तालगांव/हिंद मोटर,कोलकाता/बैंगलौर) का स्वर्गवास 43 वर्ष की आयु में लंबी बीमारी के बाद दिनाँक 19 नवंबर 2023 को बैंगलोर में हो गया।

* श्री अजय चतुर्वेदी पुत्र स्व. एड. वीरेन्द्र चतुर्वेदी (फरूखावाद/गुड़गांव) का स्वर्गवास दिनाँक 20/11/23 को गुड़गांव में हो गया।

* श्रीमती शाँति देवी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री गिरीश कुमार चतुर्वेदी का (दिल्ली) का स्वर्गवास दिनाँक 11 अक्टूबर 2023 को दिल्ली में हो गया।

* श्रीमती लक्ष्मी चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री शिव प्रकाश चतुर्वेदी (फ़िरोज़ाबाद/आगरा) का स्वर्गवास 21/11/2023 को हो गया।

* श्रीमती निर्मला,नीरा जी पत्नी स्व सुधीर कुमार (मैनपुरी/आगरा) का स्वर्गवास 65 वर्ष की आयु में दिनाँक 24 नंबम्बर 2023 की सुबह लखनऊ में हो गया है।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE.

प्रेम - करुणा
आदर - सम्मान
राग - द्वेष - हास्य - व्यंग...

इन विविध रंगों से रंगी
जीवन के अलग अलग क़िस्सों से सजी
श्री दिलीप चौबे लिखित...

मल्हार निर्मित व
दिलीप चौबे लिखित...
'यादों के गलियारों से' यह किताब
उन्हींकि दैनंदिन कार्य कलापों का
आईना बने चुनिंदा सुनहरे पत्तों की
एक फुलवारी है। आप उसमें टहलोगे
तो जानोगे उसकी सुंदरता और
महसूस करोगे उसकी ख़ुशबू !

किताब की प्रति के लिए संपर्क
सौ. वंदना - मो : 9172086799

रेखा गॅस एजन्सी

द. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन : (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com

malhar.org

(र.क्र. 2023/2070)

'हरि शंकर चतुर्वेदी
एक महान जीवन की आदर्श यात्रा'

'हरि शंकर चतुर्वेदी' - जो समाज में पुतली नाम से जाने जाते थे। संपूर्ण व्यक्तित्व के धनी थे। उनका जीवन संघर्षमय रहा,पत्नी ने हर कदम पर साथ निभाया, पर अल्पवय में एक हादसे में मृत्यु के कारण उनका साथ भी कम रहा।

हमारे दादा जी का निधन पिताजी सात वर्ष के थे तब ही हो गया था अत:बड़े भाई विजय शंकर जी, ने ही परिवार के पालन की जिम्मेदारी निभाई।वे स्वयं समाज के सम्मानित व्यक्ति थे। पिताजी ने अपने जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना किया और तीन बैंकों में चयनित हुये। वो न केवल एक अद्वितीय शाखा प्रमुख थे बल्कि उन्होंने भारत ओवरसीज बैंक की डलहौजी शाखा को अखिल भारत के प्रमुख ब्रांच मैनेजर का पुरस्कार भी दिलाया।

१९९५ में एक गलत आरोप के कारण उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी और २०१० में एक लम्बे संघर्ष के बाद उन्होंने सीबीआई के केस में स्वयं को निर्दोष प्रमाणित किया । इस वक्त भी उनको कई बड़ी फर्म्स ने अपनी कंपनी में बढ़िया वेतन पर काम करने का प्रस्ताव दिया जिसे पिताजी ने बड़ी शालीनता से ठुकरा दिया और स्वच्छंद रूप से कुछ बड़ी फर्म्स के कई वर्षो तक लीगल एडवाइजर रहे। वे दो बार कैंसर का सामना करने के बावजूद अपनी इच्छाशक्ति के साथ फिर से खड़े हो गए जो आपने आप में एक मानसिक दृढ़ता का उदहारण है।

हमारी माँ के निधन के बाद अकेले बच्चों को बड़ा करना उनके लिए संघर्ष था। उन्होंने अपनी यह जिम्मेदारी भी बहुत अच्छी तरह निभाई। वे संयुक्त परिवार के पक्षधर थे। उन्होंने जीवन भर उसका पालन किया।

वे एक उन्नत शिक्षा के पक्षधर थे उनकी मान्यता थी कि ज्ञान के साथ संघर्ष नहीं होता और खाली दिमाग शैतान का घर होता है अत: हमेशा व्यस्त रहो। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। शिक्षा के साथ खेल, कला, संगीत में गहरी रुचि रखते थे। छात्र जीवन में क्रिकेट, फुटबॉल, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, शतरंज और कैरम के बेहतरीन खिलाड़ी थे और जिसकी वजह से वो अपने कॉलेज के समय मे स्पोटर्स कैप्टन रहे। अच्छा संगीत सुनते थे, स्वयं गाते भी थे । उन्होंने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्य किए, वे बहुत कर्मठ और सरल व्यक्ति थे जो हमेशा सभी को साथ लेकर चलते थे। वे २०१२-१३ में कोलकाता सभा के प्रेसिडेंट भी रहे। अपने कार्यकाल में उन्होंने महिला सहायता राशि को बढ़ा दिया, सुन्दर कांड एवं मल्हार सामूहिक गायन करवाया, १५ अगस्त को खेल कूद का आयोजन करवाया जिसमे अन्य खेलो के अलावा १०-१० क्रिकेट मैच भी था। कलकत्ता सभा की हीरक जयंती पर हास्य नाटक 'ससुर बिना ससुराल' का मंचन किया गया 'श्री नीलोत्पल चतुर्वेदी द्वारा लिखित' श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कलकत्ता 'विगत साठ वर्ष' पुस्तक का लोकार्पण करवाया। इसी कार्यक्रम में ७५ वर्ष या उससे अधिक आयु तथा सभी भूतपूर्व सभापतियों का सम्मान किया गया 'चार्टेड फर्म "चतुर्वेदी एंड कंपनी" द्वारा कलकत्ता सभा को वर्षो से दिए जा रहे सहयोग के लिए इस संस्था का विशेष सम्मान किया गया।

वर्ष २०२२ जनवरी में एक ब्रेन स्ट्रोक के बाद भी उन्होंने अपने क्लाइंट्स की आयकर फाइल नहीं छोड़ी क्योंकि यह उनका प्रिय कार्य था । उनका अचानक चले जाना हम सभी के लिए अत्यंत ही दुखदायक है।

उनका जीवन न सिर्फ हमारे लिए बल्कि उनसे जुड़े कई लोगों के लिए प्रेरणा दायी है। आखिर में हम बस इतना कह सकते हैं कि उनके संघर्षो का अंत हो गया है 'हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वे जहाँ भी हो, शांति और सुख से रहे। और हर जन्म में हमें पिता स्वरूप मिलते रहें।

उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर सादर नमन एवं श्रद्धांजलि।

चारु - नीहार (पुत्री-दामाद)
अभिनव- चौताली (पुत्र- पुत्रवधु)
अनुज- गीतिका(पुत्र- पुत्रवधु)
ईशान (दोहिता)
नाविका, नविशा, आहना (नातिन)

(र.क्र. 2023/2057)

पूज्यनीय पिताजी की प्रथम पुण्य तिथि (22 दिसंबर 2023) पर

आपके आशीर्वाद से समृद्ध परिवार

आपकी स्मृतियों की रक्षा करता है

और उन्हें संजोता है

स्व. डॉ. शरद चन्द्र चतुर्वेदी - स्व. श्रीमती शोभा चतुर्वेदी

(17 जून 1942 – 31 दिसंबर 2022) (12 अक्टूबर 1951 – 23 अक्टूबर 2011)

श्रद्धावनत

पुत्र- पुत्रवधू : सौरभ - वंदना चतुर्वेदी

वरुण- नेहा चतुर्वेदी

पौत्री : नव्या, लक्षिता, श्यला

भाई : श्री सुशील चन्द्र चतुर्वेदी

बहन : श्रीमती मंजुला चतुर्वेदी

362- B/Block, Panki, Kanpur - 208020

Mob. : 9839789917, 9453311221, 9811459278, 9718559808

(र.क्र. 2023/2063)

Nirmala Construction
COMPANY

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी
गवर्नमेंट रजिस्टर्ड् कांट्रैक्टर

Akshay Choubey
Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech - Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)

Bazariya Ward No.1, Jawalamai
Chouraha, Damoh(M.P.) -470661

+91 8770955872
+91 8602266219

- **किसी भी प्रकार की बिल्डिंग, घर, मॉल, कॉम्प्लेक्स, कालोनी के कंस्ट्रक्शन के लिए सेवा का अवसर प्रदान करे। तथा, कंस्ट्रक्शन मशीनर, जेसीबी, फियोरी, पोकलेन, के लिए संपर्क करे!**
- **हमेशा स्नेह और सहयोग देने के लिए माननीय सतीश चतुर्वेदी और आभा चतुर्वेदी (नागपुर) को विशेष धन्यवाद !**

Private Construction Project

Government Construction Project

दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे(बगियावाले) , पुत्र - विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र,स्व. नीरज चौबे।

भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे।

(र.क्र. 2023/1425) 4/6

प्रथम पुण्य तिथि

६ दिसंबर २०२३

कर्नल आलोक चतुर्वेदी 'रिटायर्ड'

एक अति शांत धैर्यवान एवं पराक्रमी व्यक्तित्व

अश्रुपूरित नमन

विक्रम - बनारसी परिवार एवं सभी शुभ चिंतक

(र.क्र. 2023/2059)

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र. / भोपाल / 44 / 2021–23
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' दिसम्बर 2023

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8 / जी–2 / 255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

LOKMANYA TILAK JANKALYAN SHIKSHAN SANSTHA'S

LOKMANYA TILAK INTERNATIONALSCHOOL

& Educare

To inspire, to achieve
(CBSE affiliation no.1130838)

Nursery to X

LTIS

SHRI. DUSHYANT CHATURVEDI
Director, Governing Board, LTJSS

SMT. SHEETAL CHATURVEDI,
Director, LTJSS

"Education goes beyond knowledge... it is a journey of life"

- Impeccable infrastructure to augment academic and extracurricular activities
- Innovative, child friendly and Application based curriculum designed completely on Bloom's Taxonomy
- Well qualified, Trained and motivated staff
- Secured campus under CCTV surveillance
- Football, Volleyball, Badminton, Cricket, Skating, Basketball, Table- Tennis, Chess, Yoga, Music and other indoor activities

Lokmanya Tilak International School,
Plot no 93-98, Sector 4 ,
OPP HP Petrol Pump,
Vikas Nagar, KoparKhairane,
Navi Mumbai – 400709
Email :ltis.ltjss@gmail.com
Website: ltis.edu.in

Call : +917028980011
022-27541004

(र.क्र. 1295)12/12